सत्यमेव जयते

सूरत तरंग

अंक 6

वर्ष 2024-25

विशिष्ट उपलब्धियाँ

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा 'ख' क्षेत्र में स्थित निगम कार्यालयों में 2022-23 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'प्रथम' पुरस्कार प्रदान किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सूरत द्वारा वर्ष 2023 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए सम्मानित किया गया।

हिन्दी गृहपत्रिका 'सूरत तरंग' का विमोचन

संरक्षक एवं संपादक

दीपक मलिक

संयुक्त निदेशक व कार्यालय प्रभारी

उप संपादक

अमित इन्दौरिया

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संपादन सहयोग

शंभू दयाल चंदेल, उप निदेशक

अंकित कुमार, उप निदेशक

ज्ञानरंजन बेहेरा, सहायक निदेशक

मनीष कुमार, सहायक निदेशक

उप क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

द्वितीय तल, समर्थ हाउस, पाल लेक के सामने,

अडाजन-पाल, सूरत (गुजरात)

दूरभाष : 0261-2730124-29, ई-मेल : dir-surat@esic.nic.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबन्धित रचनाकारों का है। इनमें संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. Of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002.
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002.
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

कमल किशोर सोन (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत की हिन्दी गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' के नवीन अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन, कार्यालय कर्मियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को उजागर करने के साथ ही कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

कमल किशोर सोन

कमल किशोर सोन

का.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. Of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002.
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002.
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

टी. एल. यादेन
वित्त आयुक्त

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत की हिन्दी गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' के अंक-6 के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी गृह पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों के दैनिक कार्यालयीन कार्य में हिंदी के सुरुचिपूर्ण प्रयोग को बढ़ावा देगा। पत्रिका कार्यालय की विविध गतिविधियों को प्रदर्शित करने का माध्यम भी बनती है।

संपादक मण्डल सहित सभी रचनाकारों को मेरी शुभकामनाएँ ।

टी. एल. यादेन

का.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. Of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002.
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002.
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

संदेश

यह जानकर खुशी हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत की हिन्दी गृह पत्रिका '**सूरत तरंग**' के अंक-6 का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका कार्मिकों की अभिव्यक्ति के लिए एक अच्छा मंच है। सूरत में स्थापित उद्योगों के नियोक्ताओं की जिम्मेदार कार्यशैली एवं कार्मिकों की कर्मठता ने इस औद्योगिक क्षेत्र का विकास करने के साथ ही सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं को भी विस्तारित किया है। आशा है कि पत्रिका प्रकाशन से इस क्षेत्र की जानकारी मिलेगी और कार्यालय में हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ेगी जिससे संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति को सकारात्मक बल मिलेगा।

शुभकामनाओं सहित।

रत्नेश कुमार गौतम

संपादकीय

कहा गया है कि अगर किसी राष्ट्र को नष्ट करना हो तो सबसे पहले उसकी भाषा खत्म कर दीजिए, राष्ट्र स्वयं नष्ट हो जाएगा। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती हो। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसे ज्यादा से ज्यादा प्रचारित करने की आवश्यकता है। बोलचाल में हिन्दी के उपयोग की आवश्यकता है ताकि उसकी जीवंतता और उपयोगिता बनी रहे।

'जहाँ चाह, वहाँ राह' की उक्ति को साकार करने के सामर्थ्य का स्वयं हिन्दी को भी अनुमान नहीं रहा होगा। आज हिन्दी विश्व-भाषा का ख़िताब पाने के लिए सबसे बड़ी दावेदार है। मिलनसारिता एवं ग्राह्यशीलता हिन्दी के सबसे बड़े समायोजनकारी गुण हैं। यही कारण है कि मेरठ से निकली 'खड़ी बोली' अनगिनत घातों-प्रत्याघातों एवं झंझावतों को बर्दाश्त करती हुई फौलादी इरादों के साथ वैश्विक भाषा बनने के अपने अभियान में न केवल निडरता से डटी हुई है, बल्कि हिन्दी की अन्य शाखाओं, क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं के साथ-साथ कई विदेशी भाषाओं के समायोजन से पुष्ट हो प्रगति-रथ पर निर्विवाद रूप से आरूढ़ है। अब तक आयोजित 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी की इसी वैश्विक लोकप्रियता के गवाह हैं। हिन्दी की शताब्दियों पुरानी सार्वभौमिकता और भारतीय संस्कृति को धारण करने की क्षमता ने ही इसे सर्वसम्मति से 'राजभाषा' पद पर संवैधानिक रूप से सुशोभित किया है। यहाँ हमें यह समझ लेना चाहिए कि हिन्दी भाषा की प्रगति हमारे देश की प्रगति में बाधक नहीं, बल्कि इसमें सहायक है। देश का व्यापारी वर्ग इस बात को बखूबी जानता है। वक्त आ गया है कि अपनी भाषा, गौरवशाली संस्कृति और नैतिक मूल्यों के संरक्षण के प्रति सचेत हुआ जाये।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत ने सदैव बीमाकृत व्यक्ति के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करने के साथ ही राजभाषा 'हिन्दी' के प्रचार-प्रसार के कार्य को राष्ट्र के प्रति अपना पुनीत कर्तव्य मानते हुए इसे युद्ध स्तरीय प्रयासों के साथ अंजाम दिया है। राजभाषा शाखा के सहयोग से सम्पूर्ण कार्यालय ने राजभाषा से सम्बन्धित लक्ष्यों को प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इसका प्रमाण यह है कि मुख्यालय ने इस कार्यालय द्वारा राजभाषा 'हिन्दी' की प्रगति हेतु किये गये लक्ष्योन्मुख प्रयासों को 'ख' क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ घोषित करते हुए हमें वर्ष 2022-2023 के लिए 'अंतर क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड' से प्रोत्साहित किया गया है। इसके अलावा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सूरत द्वारा वर्ष 2023 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए सम्मानित किया गया है।

कार्यालय कर्मियों के हिन्दी के प्रति सम्मान, अभिरूचि एवं लेखन प्रतिभा का साकार माध्यम गृहपत्रिका 'सूरत तरंग' का छठा संस्करण आपके सामने है। विश्वास है कि हिन्दी भाषा को इसके सम्मान के उच्चतम शिखर तक पहुँचाने हेतु किया जा रहा यह अति लघु प्रयास अविराम जारी रहेगा।

"बहती रहे भावों की 'तरंग' अविरल, हिन्दी प्रगति पथ पर गतिमान रहे।
माँ 'हिन्दी' चरण-रज पखार, निज राष्ट्रभाषा उन्नत्यर्थम् समर्पित रहे॥"

दीपक मलिक
संयुक्त निदेशक व कार्यालय प्रभारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	हर वर्ष एक पेड़ लगाओ	डॉ. संजय वंश	7
2	भूमंडलीय तापन एवं मानवीय संव्यवहार	श्री मनीष कुमार	8
3	जीवन क्या है	श्री राजीव शर्मा	10
4	सामाजिक सुरक्षा में कर्मचारी राज्य बीमा निगम का योगदान	श्री पंकज कुमार	12
5	हयात	सुश्री मुस्कान कड़वासरा	14
6	मोह और प्रेम	श्री अमन अलखनियाँ	15
7	जिम्मेवारी	श्री दीन दयाल शर्मा	15
8	हिन्दी : स्वरूप, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ	श्री अमित इन्दौरिया	16
9	ई.एस.आई.सी. - चिंता से मुक्ति	श्री कल्पेश पारीक	19
10	मिर्जापुर	श्री सौरभ सिंह	20
11	रामभरोसे लोकतंत्र	श्री राजीव शर्मा	22
12	बढ़े चलो	श्री प्रमोद कुमार मीना	23
13	चैटजीपीटी और क्लाउड ए.आई.	श्रीमती दिपाली असनानी	24
14	कार्यालय में कामकाजी माहौल को बेहतर बनाने के टिप्स	श्री अभय कुमार	26
15	आभासी वास्तविकता और संवर्धित वास्तविकता	श्री भीखाभाई परमार	27
16	स्वच्छता का महत्व	श्री विशाल सौरव	29
17	लड़कपन	श्री अमन अलखनियाँ	30
18	महाबलेश्वर - एक रमणीय यात्रा	श्री पवन कुमार	32
19	आधुनिकता एवं पर्यावरण	श्री अभिषेक तिवारी	33
20	माँ	श्री कल्पेश पारीक	34
21	आओ पेड़ लगाएं	श्री हरकेश मीना	34
22	शिलालेख	श्री राजीव शर्मा	35
23	हमें आगे बढ़ना है	श्री विशाल सौरव	37
24	पुरुष	श्री राजीव शर्मा	37
25	चार धाम यात्रा	श्री अमित इन्दौरिया	38
26	पिता	श्री गुप्तेश्वर प्रसाद	42
27	भारतीय (गुजरात) खिलाड़ी का अविश्वसनीय रिकॉर्ड	श्री सुभाष चंद्र गुप्ता	42
28	केरल यात्रा वृत्तान्त	श्री हरि राम डांगी	43
29	अशांति	श्री राजीव शर्मा	44
30	चोट	श्री दीन दयाल शर्मा	45
31	आओ गुजराती सीखें	श्री नीरव अग्रवाल	50
32	राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सुझाव	राजभाषा शाखा	52
33	राजभाषा प्रयोग संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी	राजभाषा शाखा	53
34	सूरत में क.रा.बी.योजना : एक नजर	संकलन	54
35	कार्यालय में वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा की प्रगति	राजभाषा शाखा	55
36	राजभाषा पखवाड़ा की रिपोर्ट	राजभाषा शाखा	56
37	प्रतियोगिताओं में पुरस्कार	राजभाषा शाखा	57
38	कार्यालयीय कार्य में उपयोगी नेमी टिप्पणियाँ	राजभाषा शाखा	58
39	खेल-कूद में उपलब्धियाँ	संकलन	59
40	आपकी पाती	संकलन	60

हर वर्ष एक पेड़ लगाओ

फूलों से होता जगमग मन,
पत्तों से मिलता है जीवन,
पुष्पों से सजता है आंगन,
पेड़ों से बनते हैं कानन।

पौधे करते भू का श्रृंगार,
बिन इनके जीवन बेकार,
मानव का भी क्या आधार,
बिन वर्षा सारे लाचार।

मेघ बनेंगे और बरसेंगे,
वृक्ष रहेंगे तो ही हम रहेंगे,
फल खायेंगे पुष्ट रहेंगे,
दुःख-दर्दों को नहीं सहेंगे।

धूप-धूल वर्षा झेलकर,
छाया देते हैं भू पर,
उपवन को शोभित करते हैं,
तूफानों को हर दिन सहकर।

काम और निज शान की खातिर,
सड़कों और आराम की खातिर,
महलों और मकान की खातिर,
पेपर और दुकान की खातिर,

जनसंख्या के रोग की खातिर,
जाने किन-किन मौज की खातिर,
पेड़ों को सबने काटा,
नहीं कोर्ट होता कोई हाजिर।

समुद्र से मछलियां गायब हैं,
नदियों के हो रहे काले रंग,
झरने-तालाब विलुप्त हो रहे,
सब बातें करते हैं बेदम।

हर दिन सोचो,जुगत लगाओ,
हर वर्ष एक पेड़ लगाओ,
गर उसको पालो और बढ़ाओ,
स्वच्छ वायु-जल, मीठे फल पाओ।

डॉ. संजय वंश
चिकित्सा अधीक्षक
क.रा.बी.निगम अस्पताल, वापी

प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी,
उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।

सुभाषचंद्र बोस

भूमंडलीय तापन एवं मानवीय संव्यवहार

हाल के दशकों में भूमंडलीय तापन वैश्विक अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौती बनकर उभरा है जिसके परिणामस्वरुप लगभग सभी देश अपने मानव विकास के विभिन्न संकेतकों को प्रभावी ढंग से लागू करने में अक्षम रहे हैं। इसका दुष्परिणाम विभिन्न प्रारूपों के रूप में सामने आ रहा है जिसमें मौसमी परिघटना का अप्रत्याशित रूप से अनिश्चिता की ओर आकार लेना सर्वप्रमुख है। यह प्रभाव हाल के वर्षों में प्रभावी रूप से देखने को मिला है जिससे समकालीन सरकार को विभिन्न मौसमों में मूलभूत सुविधाओं को बहाल करने के लिए जूझना पड़ रहा है और इसी कारण यह विषय अपनी प्रासंगिकता बरकरार रखे हुए है।

भूमंडलीय तापन के मुख्य कारकों/अवयवों में मनुष्य एवं उसका संव्यवहार खुद जिम्मेदार है। ऐसा इसलिए है कि मनुष्य के विकास को लेकर सोच की स्वाभाविक प्रवृत्ति उस विरोधाभास को जन्म देती है जो सहजीविता के अस्तित्व एवं उनके गरिमापूर्ण एवं न्यायपूर्ण जीवन को नकारता है। मनुष्य अपनी चेतना के विकास पर तब तक गर्व करता है जब तक प्रकृति उसकी विवेकशीलता को विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं के द्वारा जिन्हें काफी हद तक मानव-जनित घटनाएं कहा जा सकता है, को चुनौती नहीं देती।

भूमंडलीय तापन कई तरीकों से मानव व्यवहार से सघन रूप से जुड़ा हुआ है। कार्बन उत्सर्जन, शहरी अवसंरचना के विकास हेतु वनों की कटाई जो दूरगामी प्रभाव को नज़रअंदाज़ करती है, कृषि पद्धति के बदलते प्रारूप और अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन आदि भूमंडलीय तापन के सामान्य कारक हैं जिनके संबंधित प्राधिकारियों द्वारा नियंत्रण हेतु विनियमन के बावजूद आवश्यक औसत सफलता भी प्राप्त नहीं हुई।

इसके अतिरिक्त मानव संव्यवहार, ऊर्जा के अत्यधिक उपयोग, अत्यधिक अपशिष्ट उत्पादन और एकल उपयोग प्लास्टिक को प्राथमिकता देने सहित उच्च उपभोग पैटर्न से परोक्ष रूप से प्रभावशाली प्रतीत होता है।

मानव व्यवहार संधारणीय प्रथाओं को अपनाकर पारिस्थितिकी संतुलन सुनिश्चित कर सकता है जो प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने और जैव विविधता को बनाए रखने में मदद करते हैं।

भूमंडलीय तापन के कारकों से निपटने में अच्छा मानवीय व्यवहार आवश्यक है क्योंकि यह सीधे हमारे पर्यावरण और सामूहिक कल्याण को प्रभावित करता है। यहाँ बताया गया है कि सकारात्मक व्यवहार भूमंडलीय तापन को कम करने में कैसे योगदान देते हैं।

भूमंडलीय तापन को कम करने के लिए व्यवहार में परिवर्तन

1. ऊर्जा दक्षता: घरों में एलईडी लाइटिंग और बेहतर इन्सुलेशन जैसी ऊर्जा-कुशल तकनीकों और प्रथाओं को अपनाने से ऊर्जा की खपत और उत्सर्जन कम हो सकता है।

2. नवीकरणीय ऊर्जा: सौर, पवन और जल विद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में परिवर्तन, जीवाश्म ईंधन से होने वाले कार्बन-डाइ-ऑक्साइड उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी ला सकता है।

3. संसाधनों का संधारणीय उपयोग: पानी, लकड़ी, खनिज और जीवाश्म ईंधन जैसे संसाधनों का ज़िम्मेदाराना उपभोग पर्यावरणीय क्षरण को कम कर सकता है। संसाधनों का ऐसी दर पर उपयोग करना श्रेयस्कर है जो पारिस्थितिकी तंत्रों को पुनर्जीवित करने की अनुमति देता है, क्षय को रोकता है और दीर्घकालिक पारिस्थितिक स्थिरता को बढ़ावा देता है।

4. संधारणीय परिवहन: सार्वजनिक परिवहन, कार पूलिंग, बाइकिंग, पैदल चलना और इलेक्ट्रिक या हाइब्रिड वाहनों का विकल्प चुनने से निजी वाहनों से होने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आ सकती है।

5. आहार में परिवर्तन: पौधे-आधारित आहार अपनाना जिससे मीथेन उत्सर्जन को कम किया जा सकता है और यह खाद्य उत्पादन से जुड़े कार्बन पदचिह्न को कम कर सकता है।

6. अपशिष्ट में कमी: गैर जरूरी सामग्रियों को कम करना, जरूरी सामग्रियों का पुनः उपयोग करना और पुनर्चक्रण करना, लैंडफिल में जाने वाले अपशिष्ट की मात्रा को कम किया जा सकता है और मीथेन उत्सर्जन में कटौती की जा सकती है। जैविक अपशिष्ट को खाद में बदलना भी मदद करता है।

7. संरक्षण प्रयास: पुनर्वनीकरण, वनरोपण और संरक्षण परियोजनाओं का समर्थन और उनमें शामिल होना, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को अवशोषित करने और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने में मदद कर सकता है।

8. शिक्षा और जागरूकता: लोगों को उनके व्यवहार के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में शिक्षित करना अधिक टिकाऊ विकल्पों को बढ़ावा देता है। जागरूकता पहल सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा दे सकती है तथा व्यक्तिगत जीवनशैली में बदलाव से लेकर पर्यावरण संरक्षण के लिए नीति-स्तरीय समर्थन तक बढ़ावा मिलता है।

9. नीति और संस्कृति की भूमिका: स्थिरता और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति सांस्कृतिक दृष्टिकोण व्यवहार में बदलाव ला सकते हैं। जैसे-जैसे सामाजिक मानदंड पर्यावरण संरक्षण को महत्व देने की ओर बढ़ते हैं, व्यक्तिगत क्रियाएं और उपभोक्ता विकल्प अक्सर इसका अनुसरण करते हैं।

10. अन्य विकल्पों को बढ़ावा देना: पुन:प्रयोज्य बैग, कंटेनर, पानी की बोतलें और स्ट्रॉ के उपयोग का समर्थन किया जाना चाहिए। उपभोक्ताओं और व्यवसायों को इन विकल्पों पर स्विच करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

11. 'शून्य-अपशिष्ट' जीवनशैली को बढ़ावा: थोक खरीदारी और पैकेज्ड सामान से बचने जैसी जीवनशैली विकल्पों के माध्यम से अपशिष्ट को कम करने में समुदायों और व्यक्तियों का समर्थन किया जाना चाहिए।

12. स्थायी विकल्प: पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का चयन करना और संधारणीय प्रथाओं के साथ कंपनियों का समर्थन करना, प्रदूषणकारी उद्योगों की मांग को कम करता है।

प्रभावी जलवायु कार्रवाई के लिए मानव व्यवहार और ग्लोबल वार्मिंग के बीच संबंधों को समझना और संबोधित करना महत्वपूर्ण है। व्यक्ति और समुदाय, सचेत विकल्प बनाकर और प्रणालीगत परिवर्तनों का समर्थन करके ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को कम करने में योगदान दे सकते हैं।

संक्षेप में, व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर अच्छे मानवीय व्यवहार से भूमंडलीय तापन में पर्याप्त कमी आ सकती है तथा पर्यावरण की गुणवत्ता और स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। मानव अस्तित्व और हमारी धरती की समग्र भलाई के लिए मानवीय संव्यवहर में उचित बदलाव लाकर भूमंडलीय तापन को समयानुकूल सुलझाने से एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है।

मनीष कुमार
सहायक निदेशक

जीवन क्या है ?

अगर जीवविज्ञान की दृष्टि से सोचा जाये तो जन्म से मृत्यु के बीच की अवधि को जीवन कह सकते हैं और सजीव होने की शर्तों (साँस लेने, खाने-पीने, प्रजनन करने इत्यादि) को पूरा करने से जीवन बनता है। इस बारे में कई आधुनिक बहसें भी शुरू हो गई हैं कि गर्भ में शिशु को कब माँ के शरीर से अलग एक जीवन माना जाना चाहिए। पूरी दुनिया इसी बिना पर गर्भपात सम्बन्धी कानून निर्धारित करने का आधार स्थापित करने की कोशिश कर रही है। इसके साथ ही, इच्छा मृत्यु की वकालत करने वाले भी जीवन को सजीव होने की शर्तों से मुक्त करके देखने और दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। इसके अलावा जीवन का दर्शन समझने के लिए सदियों से मनुष्य कोशिश करता आ रहा है। इसी दरम्यान एक प्रश्न सदियों से निरंतर हमारे सामने है कि जीवन का मकसद क्या है? सिग्मंड फ्रायड अपने 'द डेथ ड्राइव कांसेप्ट' का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं- "जीवन का अंतिम उद्देश्य मृत्यु है।" इस विचार के अनुसार जीवन का प्रारम्भ होते ही उसका मकसद तय हो जाता है और वह है-मृत्यु। बाकी सब इस सफ़र के बीच का विवरण मात्र है। परन्तु जीवन क्या मृत्यु की ओर एक दौड़ मात्र है!

क्या आपने कभी किसी ऐसे इन्सान से उसके जीवन का मकसद पूछा है जो सुबह उठता है, दिन भर अपने काम में व्यस्त रहता है और सो जाता है। किसी भाजी वाले से ये पूछा है, जो सुबह होने के पहले सस्ती और ताज़ी सब्जियों के लिए थोक बाज़ार निकल जाता है। उससे अगर ये सवाल पूछा जाये तो वह पहले तो चौंकेगा, फिर जोर देने पर अगली सुबह तक का मकसद बता पाएगा कि उसे ताज़ी सब्जियां मिल जाएँ और शाम को अच्छे दामों पर बिक जाएँ। उन पैसों से वह घर का कुछ सामान और बच्चों के लिए खिलौने लायेगा। बचे हुए पैसों से कल सुबह फिर सब्जी लाने निकल जायेगा। इसके अलावा उसका मकसद एक छोटा घर, बच्चों की पढ़ाई इत्यादि हो सकती है। परन्तु यहाँ पर ये ध्यान देने की बात है कि ये उसका मकसद है, उसके जीवन का नहीं। उसके जीवन का मकसद तो किसी ऐसे बड़े उद्देश्य में निहित होना चाहिए, जिसमें उसका पूरा जीवन समाहित हो सके। अधिकांश लोगों का जीवन ऐसे ही छोटे-छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए व्यतीत होता है। ऐसे में वो किसी एक बात को अपने जीवन का मकसद नहीं बता सकते या निर्धारित कर सकते। जो लोग अपने जीवन की कीमत जानना चाहते हैं, वे अपने जीवन के मकसद की तलाश में निकल पड़ते हैं। कुछ को इसमें सही रास्ता मिल भी जाता है, कुछ किसी लक्ष्य को ही जीवन का मकसद समझ बैठते हैं। हालाँकि, जो भी हो, मकसद मिले या उसके मिलने का भ्रम मिले, आगे बढ़ने का रास्ता खुल जाता है।

अब सवाल आता है कि जीवन में होता क्या है? अगर इसका उत्तर बुद्ध से जानना चाहें तो वो कहते हैं कि जीवन दुःख है। दुःख जीवन में होता है और वो होकर रहेगा। जीवन कभी एक सा नहीं रह सकता। आप यहाँ पर जीवन को किसी इन्सान के जीवन के समय से समझ सकते हैं। इस प्रकार जीवन का समय/परिस्थितियां निरंतर बदलती रहती हैं। हम अपनी सुविधा और इच्छा के विपरीत किसी भी परिवर्तन से दुःखी हो जाते हैं। जबकि दरअसल वह एक परिवर्तन ही है। उदाहरण के तौर पर देखें तो किसी दिन एक इन्सान को रास्ते में पड़ा हुआ एक बटुआ मिल जाता है, जिसमें काफी धन है तो

वह प्रसन्न हो जाता है। दूसरे दिन वो बटुआ खो जाता है तो वह दु:खी हो जाता है। वह उस समय/परिस्थिति को कोसने लगता है। बटुआ मिलने की बात वो भूल जाता है, लेकिन उसके खोने की बात वो वर्षों तक नहीं भूलता है और इस घटना का ज़िक्र हमेशा एक दु:ख के कारण के रूप में करता है। यहाँ अंतर केवल यह है कि उसने बटुआ मिलने की बात तो स्वीकार कर ली, लेकिन उसके खोने की बात स्वीकार नही कर पाया। इस तरह परिस्थितियों के परिवर्तन की अस्वीकार्यता दु:ख उत्पन्न करती है, ऐसा कहा जा सकता है।

लेकिन हर कोई दु:ख-सुख से निरपेक्ष नहीं रह सकता। ये केवल सिद्ध व्यक्ति ही कर सकते हैं। हमारे जीवन में दु:ख-सुख किसी भी परिस्थिति में रहने ही वाला है। सुख को स्वीकार करने में कोई झंझट ही नहीं है, इसलिए केवल दु:ख ही बच जाता है, जिससे जीवन प्रभावित होने वाला है। हिन्दू पौराणिक कथाओं में इस बारे में एक बात बड़ी सही कही गई है कि जिस तरह कमल पानी पर रहता है, पानी में नहीं रहता। उसी तरह दु:ख के साथ रहा जाये लेकिन दु:खी होकर नहीं। इस बात पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि जो सुख हमें मिले हैं, हम उन्हें स्वीकार कर उन्हें भूल गये हैं। उनकी वजह से खुश भी रहा जाये। जब दु:ख साथ रहने ही वाला है तो हर समय दु:खी रहकर भी आखिर क्या मिल सकता है!

बात वहीं से शुरू की जानी चाहिए, जहाँ पर ख़त्म होती है। दु:ख अनचाही परिस्थितियों की अस्वीकार्यता से उत्पन्न होता है। लेकिन, अस्वीकार्यता भी कहाँ अपने बस में है। ये स्वाभाविक ही है कि दु:ख तो अस्वीकार्य ही होता है सबको। अब राह चलते चोट लग जाये तो कौन होगा जो इसे स्वीकार कर इसका स्वागत करेगा? कोई नहीं। स्वाभाविकता भी प्रकृति का ही एक पर्याय है। जिस तरह प्रकृति अपने नियमों से चलती है, उसी तरह स्वाभाविकता भी अपने कुछ पैटर्न से चलती है। स्वाभाविकता भी संस्कृति के चलन पर निर्भर करती है। जैसे होठों में लोहे के छल्ले पहन लेना दक्षिण अफ्रीका के कुछ कबीलों के लिए स्वाभाविक है, वहीं शेष दुनिया के लिए बिलकुल अजीब प्रथा। स्वाभाविकता व्यक्तिगत भी होती है, जैसे किसी के लिए देर रात सोना और दिन में देर से उठना स्वाभाविक है और दूसरों के लिए अस्वाभाविक। ओह, क्या बात कर रहा था, कहाँ आ फंसा !

बात कुल मिलाकर यही है कि परिस्थितियों की स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता अपने बस में ही नहीं है, जिसे दु:ख का मूल कारण समझा जा सकता है। तो फिर, दु:ख पर अपना बस कहाँ चल सकता है ! अपनों का मोह हमें मानवीय भावनाओं में व्यस्त ही रखेगा और हम इसी तरह खुश और दु:खी होते रहेंगे। कम से कम तब तक, जब तक मूल ज्ञान की रोशनी हमें छू कर नहीं जाती। हमारे बस में केवल यही है कि इस रोशनी को पाने के लिए हम रोशनी और अपने बीच के दरीचे खोलते रहें। जब तक आखिरी दरीचा नहीं खुल जाता, इस रोशनी को देख पाना भी अपने बस में नहीं, इसे पाना तो दूर की बात है। बस, यही उम्मीद कर सकते हैं कि जितनी जल्दी हम रोशनी के दरीचों तक पहुँच पायें, इसे खोलने का तरीका पा सकेंगे। इस तरीके को पाने के लिए बुद्ध सात सालों तक पेड़ के नीचे कई उपाय आजमाते रहे कि रोशनी तक पहुँच पायें। वो विलक्षण थे, तब सात सालों के हर पल का इस्तेमाल कर इसे पा सके। हम साधारण लोगों से, जो सुबह-शाम बाबूगिरी और गृहस्थी के बीच झूल रहे हैं, क्या ही उम्मीद की जा सकती है! फिर भी, कोशिश तो जारी ही रहेगी। आह! अब क्या लिखूं, शाम हो रही है। अँधेरा होने के पहले रोशनी तक पहुंचना भी है।

राजीव शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

(जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

सामाजिक सुरक्षा में कर्मचारी राज्य बीमा निगम का योगदान

अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार ''वह सुरक्षा जो समाज, उचित संगठनों के माध्यम से अपने सदस्यों के साथ घटित होने वाली कुछ घटनाओं और जोखिमों से बचाव के लिए प्रस्तुत करता है, सामाजिक सुरक्षा कहलाती है।” ये जोखिम बीमारी, मातृत्व, अपंगता, वृद्धावस्था तथा मृत्यु हैं। सामाजिक सुरक्षा की यह विशेषता होती है कि उक्त किसी जोखिम के वक्त व्यक्ति को अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए नियोक्ताओं द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाये। भारत में भी सामाजिक सुरक्षा देने के लिए कई अधिनियम बनाये गये हैं, उनमें से एक मुख्य अधिनियम है- कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948। इस अधिनियम के अंतर्गत संगठित क्षेत्रों में कार्यरत ऐसे कर्मचारी जिनका मासिक वेतन वर्तमान में 21,000/- अथवा इससे कम है, उनसे नाममात्र का अंशदान लेकर कई तरह के हितलाभ दिए जाते हैं। वर्तमान में अंशदान की दर कुल मजदूरी का मात्र 4% है, जिसमें से 3.25% नियोक्ता से एवं 0.75% कर्मचारियों से लिया जाता है। उक्त अंशदान के एवज में निम्न महत्वपूर्ण हितलाभ बीमाकृत व्यक्तियों को दिये जाते हैं:-

1) **चिकित्सा हितलाभ :** बीमाकृत व्यक्ति और उसके परिवार के सदस्यों को बीमा-योग्य रोजगार में प्रवेश करने के दिन से ही पूर्ण चिकित्सा देखभाल प्रदान की जाती है। बीमाकृत व्यक्ति या उसके परिवार के सदस्य के उपचार पर व्यय की कोई सीमा नहीं है। सेवानिवृत्त और स्थायी रूप से विकलांग बीमाकृत व्यक्ति और उनके जीवनसाथी को भी 120/- रुपये के वार्षिक प्रीमियम के भुगतान पर चिकित्सा देखभाल प्रदान की जाती है।

   पात्रता :- चिकित्सा हितलाभ बीमायोग्य नियोजन में प्रवेश के पहले दिन से शुरू हो जाता है।

2) **बीमारी हितलाभ :** जब कोई बीमाकृत व्यक्ति बीमार पड़ जाता है और बीमारी के दौरान काम पर नहीं जा पाता है। इस स्थिति में यदि नियोक्ता द्वारा मजदूरी का भुगतान नहीं किया जाता है तो उसकी मजदूरी की 70% राशि का भुगतान किया जाता है।

   पात्रता :- 9 माह की सेवा एवं संगत अंशदान अवधि के दौरान 78 दिनों का अंशदान।

3) **विस्तारित बीमारी हितलाभ :** जब बीमाकृत व्यक्ति किसी लम्बी बीमारी से पीड़ित हो जाता है और वह लगातार 91 दिन से अधिक बीमार रहता है तब उसे उसकी मजदूरी की 80% राशि का भुगतान किया जाता है।

   पात्रता :- 2 वर्षों के लिए लगातार बीमा-योग्य रोजगार एवं 4 लगातार अंशदान अवधियों के दौरान 156 दिनों का अंशदान।

4) **मातृत्व हितलाभ :** मातृत्व हितलाभ महिला कर्मचारियों के लिए एक वरदान साबित हुआ है। किसी भी महिला द्वारा गर्भावस्था के अंतिम कुछ सप्ताह के दौरान एवं प्रसव के बाद शिशु की देखभाल के कारण वह काम पर नहीं जा पाती है। इसे ध्यान में रखते हुए बीमाकृत महिला को अधिकतम 26 सप्ताह तक 100% मजदूरी का भुगतान किया जाता है।

   पात्रता :- 9 माह की सेवा एवं 2 पूर्ववर्ती अंशदान अवधियों में 70 दिनों का अंशदान।

5) अस्थायी अपंगता हितलाभ : जब किसी मजदूर को काम के दौरान चोट लगती है तब उसके ठीक होने तक उसकी मजदूरी की 90% राशि का भुगतान किया जाता है।

पात्रता :- बीमा-योग्य नियोजन में प्रवेश के पहले दिन से बीमाकृत व्यक्ति पात्र हो जाता है।

6) स्थायी अपंगता हितलाभ : जब किसी मजदूर को काम के दौरान रोजगार चोट लगती है एवं उस रोजगार चोट के कारण यदि बीमाकृत व्यक्ति को कोई स्थायी अपंगता होती है तब उसे उसकी अपंगता के स्तर के अनुसार निर्धारित दर पर जीवनपर्यंत पेंशन दी जाती है।

पात्रता :- बीमा-योग्य नियोजन में प्रवेश के पहले दिन से बीमाकृत व्यक्ति पात्र हो जाता है।

7) आश्रित हितलाभ : सोचिये जब किसी मजदूर की रोजगार चोट के कारण मृत्यु हो जाती है तब उसके आश्रितों पर क्या बीतती होगी। उनके परिवार का एकमात्र कमाने वाला सदस्य सदा के लिए उन्हें छोड़ कर चला जाता है। ऐसी स्थिति में कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा आश्रितों को जीवनपर्यंत पेंशन दी जाती है।

पात्रता :- बीमा-योग्य नियोजन में प्रवेश के पहले दिन से बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु होने पर आश्रित पात्र हो जाते हैं।

8) अंत्येष्टि व्यय : जब बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसके परिवार या कोई अन्य व्यक्ति जो उसकी अंत्येष्टि करता है, उसे अंत्येष्टि व्यय हेतु अधिकतम रु. 15000/- की राशि मिलती है।

पात्रता :- बीमा-योग्य नियोजन में प्रवेश के पहले दिन से ही पात्र।

इसके अतिरिक्त, यह योजना बीमाकृत व्यक्तियों को कुछ अन्य आवश्यकता आधारित हितलाभ भी प्रदान करती है, जैसे- अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना, राजीव गाँधी श्रमिक कल्याण योजना, व्यावसायिक पुनर्वास, शारीरिक पुनर्वास आदि। इस आधार पर हम समझ सकते हैं कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, गरीब मजदूरों के लिए वरदान से कम नहीं है। कहा जाता है जिसका कोई नहीं होता है उसका भगवान होता है। ठीक उसी तरह जब किसी गरीब मजदूर का विषम परिस्थितियों के समय साथ देने वाला कोई नहीं होता है, तब उसी बेसहारा मजदूर एवं उनके आश्रितों का सहारा बनता है- हमारा निगम। इसी सहारे के बल पर मजदूर चिंता से मुक्त होकर अपना कार्य करते हैं और इसीलिए कर्मचारी राज्य बीमा निगम का आदर्श वाक्य है “ईएसआईसी – चिंता से मुक्ति”।

पंकज कुमार
सहायक

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

हयात

बैठकर किनारों पर समंदर पार नहीं होते,
ख्वाबी परिंदो की उड़ान के आसार नहीं होते,
हार ना माने जो हार जाने के डर से,
उन्ही को हार के पैगाम स्वीकार नहीं होते।

ख्वाब जो खुली आँखों से देखते हो,
बिन श्रम वो ख्वाब कभी साकार नहीं होते,
अधूरी नींदे ही जीत की गवाही देंगी,
सोते रह जाने से चमत्कार नहीं होते।

चाहत हो गर चाँद तारों तक जाने की,
फिर राहों पर बिछे सदा गुलज़ार नहीं होते,
जो हो मन में जूनून तो चीर दे पहाड़ को,
कामयाबी खरीदने के लिए कभी बाज़ार नहीं होते।

ठोकरें ही ज़िन्दगी की राहें तय करती हैं,
बिन ठोकर कभी विजय से इख्तियार नहीं होते ,
अकेले ही तय करना पड़ता है मीलों का फ़ासला,
राहों के पत्थर उठाने को सदा यार नहीं होते।

गर अपने हर कर्म को धर्म से साधा हो,
नेत्र फिर अश्कों के हक़दार नहीं होते,
जो गमों की स्याही से सुकून लिखना जानता हो,
फिर ज़िन्दगी के पन्नो पे हावी आजार नहीं होते।

जीने को एक पल भी काफ़ी है हँसी का,
गमगीन होने को बहाने हज़ार नहीं होते,
हयात तो क्या है दो पल का आशियाना,
हर बार ज़िंदा रहने को ये संसार नहीं होते।

है रूह का लिबास ये जिसका गुमान करते हो,
वरना रूह के तो कभी आकार नहीं होते,
शुकराना परवरदिगार का हर साँस पर कीजिये,
ये प्राण मानव के सदा वफ़ादार नहीं होते।

मुस्कान कड़वासरा
प्रवर श्रेणी लिपिक

समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिन्दी या हिंदुस्तानी है।
सर जार्ज ग्रियर्सन

मोह और प्रेम

कई बार हम अपनी मोह और प्रेम की भावना में अंतर करने में चूक कर बैठते हैं और इसके चलते जीवन के अहम् फैसले गलत कर देते हैं। इसलिए अत्यंत आवश्यक हैं कि हम इन दोनों में भेद समझ सकें। मोह में व्यक्ति केवल किसी पद, वस्तु या व्यक्ति आदि को प्राप्त करने की तीव्र भावना रखता है। उसके लिए मुमकिन है कि वह कोई जुगाड़ भी लगाये जो अनुचित हो और उसको उसकी मंजिल तक शीघ्र पहुँचा भी दे, पर गौर करने वाली बात यह है कि वह उस चीज़ को प्राप्त करने के कुछ समय पश्चात उसकी कद्र करना बंद भी कर देगा।

वहीं प्रेम, जिसमें हम किसी चीज़ को प्राप्त करने की नहीं अपितु उसकी सलामती की प्रार्थना करते हैं। प्रेम में ठहराव होता है। वह एक सफर की तरह हमें बेहतर भी महसूस कराता है और उस वस्तु, व्यक्ति आदि को शीघ्र प्राप्त करने की तीव्र भावना को भी नियंत्रित रखता है। यह प्रेम ही है जो हमारी पसंदीदा चीज़ के प्राप्त होने के बाद भी उसकी कद्र करवाता है और नहीं करने पर भी संतोष रखवाता है। उसमें व्यक्ति को चिंता अपनी मंजिल अप्राप्त होने की नहीं बल्कि वह व्यक्ति जिसके लिए उसमें प्रेम है, वह सही सलामत तो है ना इसकी रहती है।

मोह में हम हक जताते हैं जबकि प्रेम में दूसरे को हक जताने का अधिकार देते हैं। उदाहरणस्वरुप जब एक माँ अपने बच्चे को दुनिया से छुपाकर अपने पास ही हमेशा रखने का सोचती हैं तो वह मोह की श्रेणी में आता है। वहीं दूसरी माँ अपने बच्चे की तरक्की बिलकुल भी नहीं रुके इसके लिए उसे जहाँ पढ़ने, सीखने या नौकरी करने जाना हैं, वहाँ जाने देती है और साथ ही उसका हाल-चाल भी बराबर पूछती रहती हैं, वह प्रेम हैं। युवा वर्ग में भी कभी किसी को सिर्फ पा लेनी की चाह मोह ही है पर इंतजार करके दूसरे का ख्याल रखना एवं दूसरा अगर किसी अन्य व्यक्ति के साथ अधिक खुश है, इससे स्वयं भी खुश रहना और संतुष्टि रखना सार्थक प्रेम में आता हैं और वह समाज में शांति भी बनाये रखता है।

अमन अलखनियाँ
प्रवर श्रेणी लिपिक

जिम्मेवारी

जिम्मेवारी है लीगल की, रोज कोर्ट जाता हूँ।
जाता हूँ वक्त पर, लेकिन बेवक्त आता हूँ।
निश्चित तिथि को, कोर्ट जाना है जरुरी।
बारिश या तूफ़ान, कोर्ट जाना है मज़बूरी।
मंगलवार को केस की भरमार होती है।
सोमवार को ही नींद हराम हो जाती है।
जाता हूँ होकर परफेक्ट केस में,
प्रयास के बावजूद भी, डेट लेकर आता हूँ।
जिम्मेवारी है लीगल की रोज कोर्ट जाता हूँ।

दीन दयाल शर्मा
कार्यालय अधीक्षक

हिन्दी : स्वरूप, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

भाषा मानव-जीवन का अभिन्न अंग है। यह विचारों, चिंतन, आवश्यकताओं एवं भावों को शब्दों में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक है। जन्म के बाद व्यक्ति अपनी मातृभाषा को अपने परिवार एवं समुदाय द्वारा प्राकृतिक रूप से सीखता है और इस तरह से भाषा उसकी पहचान का एक अभिन्न अंग बन जाती है। भाषा व्यक्ति को उसके परिवार, समुदाय, समाज एवं कई मायनों में उसके राष्ट्र की पहचान से जोड़ती है।

हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 57.1% लोग हिन्दी जानते हैं, जिसमें से लगभग 43.63% भारतीय लोगों ने हिन्दी को अपनी मूल भाषा या मातृभाषा घोषित किया था। हिन्दी, विभिन्न भारतीय राज्यों की आधिकारिक भाषाओं और क्षेत्र की बोलियों का उपयोग करने वाले लोगों में से अधिकांश की दूसरी भाषा है। हिन्दी भारत में संपर्क भाषा का कार्य करती है। देश का लगभग 60 प्रतिशत बाजार हिन्दी बोलने वाले लोगों का है।

अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात में भी हिन्दी का उपयोग करने वाले लोगों की बड़ी संख्या मौजूद है। आबूधाबी में हिन्दी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिल चुकी है। आज दुनिया का हर छठा व्यक्ति हिन्दी बोलने और समझने लगा है। आज जर्मनी, जापान, चीन आदि देशों ने अंग्रेजी को नकार कर अपनी भाषा में कार्य करते हुए हर क्षेत्र में प्रगति की है तो हम हिंदुस्तानी क्यों नहीं कर सकते? हिन्दी भाषा अन्य भाषाओं की तुलना में आसान है। विश्व के अनेक देशों में लिपि के नाम पर केवल चित्रात्मक विधियां हैं। तब भी वे देश उन्नति के मामले में शीर्ष पर हैं। रूस, चीन, जर्मनी, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, जापान, नीदरलैंड आदि देशों के उदाहरण सबके सामने हैं। बोली की दृष्टि से हिन्दी विश्व में द्वितीय स्थान पर है, जबकि प्रथम बड़ी बोली मंदारिन है जिसका प्रभाव दक्षिण चीन के क्षेत्र में सीमित है, अतः वह आंचलिक ही है।

आजादी के आंदोलन के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ पूरे देश को एकजुट करने में हिन्दी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही। हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं ने मिलकर स्वतंत्रता संघर्ष को मजबूत किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सन् 1917 में सबसे पहले हिन्दी की राष्ट्रभाषा के रूप में हिमायत की थी।

स्वतंत्रता के बाद राज्यों को उनकी राजकीय भाषा घोषित करने की स्वायत्तता दी गयी। केन्द्रीय सरकार के काम-काज के लिए हिन्दी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग सुनिश्चित किया गया। हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए ही उसे राजकीय भाषा का दर्जा दिया गया। इसके साथ अंग्रेजी को भी 15 वर्षों के लिए रखा गया था। किंतु 1960 के दशक में दक्षिणी राज्यों में व्यापक एवं हिंसक हिन्दी विरोधी प्रदर्शनों के बाद परिवर्तित परिस्थितियों ने इसमें बदलाव नहीं आने दिया। फिर भी संविधान (धारा 351 के अनुसार) यह आदेश देता है कि हिन्दी की स्वीकार्यता का निरंतर प्रयास किया जाये और उसको सरल एवं हर क्षेत्र में उपयोग करने के लिए विकसित किया जाये ताकि वह समय आने पर राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त कर सके।

आज आजादी के 77 वर्ष बाद भी संपूर्ण भारत में सरकारी काम-काज के लिए हिन्दी को राजभाषा के रूप में पूरी तरह अपनाया नहीं गया है। अंग्रेजी के कई शब्दों को वर्तमान में हिन्दी में स्वीकार कर लिया गया है और हिन्दी के कई पुराने शब्दों को प्रचलन से बाहर होने के कारण दरकिनार कर दिया गया है। इससे हिन्दी को काफी नुकसान पहुंचा है।

एक सच्चाई यह भी है कि हिन्दी के विकास के बावजूद इसकी वर्णमाला, पूरी गिनती या हिन्दी महीनों के नाम बहुत कम लोगों को याद होंगे। अंग्रेजी का प्रभाव इस हद तक बढ़ा है कि हमारे बच्चे अब बारह, तेरह और तिरसठ नहीं समझते हैं बल्कि अंग्रेजी के अंकों को ही समझते और बोलते हैं। ज्यादातर कामकाजी लोगों को कंप्यूटर पर काम करना होता है। ऐसे में उन्हें संवाद से लेकर लेखन तक में अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी का उपयोग करना पड़ता है। हेलो, हाय, थैंक्यू, एसक्यूज़ मी, डिनर, लंच, फिटनेस, ग्लैमर, कांग्रेचुलेशन, नाइस, मीटिंग जैसे जाने कितने अनगिनत अंग्रेजी शब्द हमारी बोलचाल की हिन्दी भाषा में घुस चुके हैं। हमें अहसास भी नहीं होता कि हमारी हिन्दी का प्रयोग कितना बदल गया है। अनुमान है कि आजकल भारत में लगभग 80 प्रतिशत लोग हिन्दी और अंग्रेजी के शब्दों का इस्तेमाल एक साथ करते हैं किन्तु यह हिन्दी के विकास में बाधक ही है। हिन्दी भाषी प्रदेशों में भी सड़कों के संकेत, दुकानों के नामपट्ट, विवाह, शादी समारोह के निमंत्रण पत्र आदि अंग्रेजी भाषा में छपते हैं। प्रथमतः हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लोगों को अंग्रेजी को हतोत्साहित करते हुए हिन्दी के अधिकतम प्रयोग का दृढ़ संकल्प लेना ही चाहिए।

हिन्दी भाषा, ज्ञान-विज्ञान और वर्तमान समय की नई-नई तकनीकों को व्यक्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। हिन्दी भाषा में यह गुण होते हुए भी यह आज के ज्ञान-विज्ञान और उच्च शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम नहीं बन पा रही है क्योंकि हिन्दी भाषा में ज्ञान-विज्ञान और उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए पुस्तकों का अभाव है। हालांकि इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं। ज्ञान-विज्ञान और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी पुस्तकों के लेखन से हिन्दी भाषा का क्षेत्र व्यापक होगा और इन क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त करने में भी आसानी होगी।

स्वतंत्रता पूर्व भी भारत में हिन्दी का किसी भी विदेशी अथवा क्षेत्रीय भाषा के साथ कोई संघर्ष नहीं था। लेकिन विदेशी शासकों द्वारा पहले फारसी और बाद में अंग्रेजी को राजभाषा बनाकर हिन्दी का न्यायोचित अधिकार छीन लिया गया। इसी कारण हिन्दी को 'राजभाषा' पद पाने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा। सामान्यतः हर स्वतंत्र राष्ट्र के बहुसंख्यक जन की भाषा को ही 'राष्ट्रभाषा' का गौरव प्राप्त होता है और राष्ट्रभाषा को ही 'राजभाषा' बनाया जाता है। हिन्दी को भारत के बहुसंख्यक जन की भाषा होने के कारण 'राजभाषा' का खिताब तो मिला लेकिन उदासीन मानसिकता एवं राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव के कारण इसे वह सम्मान नहीं मिल पाया जिसकी यह हकदार है।

हिन्दी में ग्रहणशीलता का अद्भुत गुण है। अन्य भाषाओं और बोलियों से आये हुए शब्द ग्रहण करने के बाद भी हिन्दी के स्वरूप में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन या बदलाव देखने को नहीं मिलता है। यह हिन्दी का एक अद्भुत लक्षण है। अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी भाषा में परिवर्तन की गति बहुत तेज एवं आधुनिकता पर आधारित है। यह एक वैज्ञानिक भाषा है जिसमें जो लिखा जाता है वही बोला जाता है।

हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिन्दी अलग-अलग भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित कर सही मायने में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। सबसे बढ़कर हिन्दी के प्रसार से पूरे देश में एकता और राष्ट्रीयता की भावना मजबूत होगी। वर्तमान में कार्यालयों में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं एवं सरल हिन्दी के प्रयोग ने हिन्दी के प्रति रूझान को बढ़ाया है।

देश का युवा अब राजनीतिक मुद्दों से ऊपर उठकर रोजगार एवं आर्थिक विकास को अधिक प्राथमिकता देता है। हिन्दी वर्तमान में रोजगार के अवसर प्रदान कर रही है जिससे इसकी स्वीकार्यता बढ़ी है। दक्षिण भारतीय राज्यों में हिन्दी विषय लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है। कई दक्षिणी राज्यों में हिन्दी को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है। इसके साथ ही हिन्दी सिर्फ भाषा ही नहीं बल्कि एक बाज़ार बन चुकी है जिसमें साहित्य से लेकर टीवी और फिल्म जैसे बड़े कारोबार शामिल हैं।

मोबाइल, एप्स, इंटरनेट और गैज़ेट्स के जमाने में अगर हिन्दी को भी उसी तरीके में ढाला जाए तो हिन्दी का विस्तार ज्यादा से ज्यादा और जल्द से जल्द होगा। हिन्दी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से इंटरनेट पर आसानी से सूचनाएं मिल जाती हैं। व्हाट्सअप, ब्लॉग, फेसबुक, ट्वीटर (अब एक्स) इत्यादि में हिन्दी का प्रयोग सहजता से किया जा सकता है। फेसबुक, गूगल आदि कंपनियाँ भारतीय उपभोक्ताओं में अपनी पैठ बढाने के लिये कई सारी सेवायें हिन्दी सहित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रदान कर रही हैं। तमाम वैश्विक चुनौतियों के बावजूद हिन्दी अखबारों का प्रसार भी बहुत तेजी से बढ़ा है। युवा पीढ़ी को इस माध्यम में ज्यादा से ज्यादा जोड़ने की जरूरत है ताकि हिन्दी को सिर्फ भावनात्मक समर्थन ही नहीं, बल्कि ऐसे उपयोगी और वास्तविक समर्थन मिलें जो इसकी दशा और दिशा को तय करने में कारगर साबित हों।

मीडिया के द्वारा जिसमें विशेष रूप से देशव्यापी इलेक्ट्रोनिक मीडिया के विस्तार ने हिन्दी को देश के कोने-कोने में आसानी से पहुँचा दिया है और उसकी स्वीकार्यता को बढ़ाने का काम किया है। हिन्दी फीचर फिल्मों की बढ़ती हुई लोकप्रियता ने हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के स्वरूप में अपनाने के लिए जहाँ कई चुनौतियाँ हैं तो वहीं कई अच्छी संभावनायें भी हैं। जरूरत है कि हिन्दी की स्वीकार्यता को बढ़ाया जाये। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाये जा सकते हैं:–

✦ निरंतर प्रगति एवं विकास ही भाषा को स्वस्थ एवं जीवित रखता है और उसके लिये अन्य भाषाओं, संस्कृतियों से आदान-प्रदान अत्यंत आवश्यक है। इसलिए हिन्दी को अपने शब्दकोश को क्षेत्रीय भाषाओं की सहायता से विस्तारित करते रहना चाहिये। इससे हिन्दी की कठिनता को कम करने व इसका प्रयोग नये क्षेत्रों व भू-भागों में बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी।

✦ जहाँ हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते हैं, वहीं हमें क्षेत्रीय भाषाओं को भी समान बढ़ावा देना चाहिए। वहीं यह भ्रम भी दूर होना चाहिए कि हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में कोई प्रतिस्पर्धा है। बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों से हिन्दी समृद्ध हुई है।

✦ हिन्दी को विज्ञान-तकनीकी, इंटरनेट के नये साधनों से प्रोत्साहित करने की जरूरत है। जिससे इसके उपयोग करने में युवा वर्ग को आगे लाया जा सके। 'हिंगलिश' के प्रयोग को एक अवसर के रूप में देखना चाहिये क्योंकि एक तरफ यह युवा वर्ग को आकर्षित करती है, वहीं इससे हिन्दी का बोलचाल में प्रयोग बना हुआ है।

अंततः हमें यह समझना चाहिये कि अगर हम हिन्दी को क्षेत्रीय भाषाओं की पालक भाषा के साथ-साथ एक सरल, उपयोगी, प्रगतिवादी, लोकप्रिय, लचीली एवं निरंतर अपने आपको एक नए कलेवर के रूप में गढ़ने वाली भाषा के रूप में ढाल सकें तो आशा है कि वह जल्द ही राष्ट्रभाषा के रूप में सभी को स्वीकार्य होगी।

अमित इन्दौरिया
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।
आचार्य विनोबा भावे

ई.एस.आई.सी.-चिंता से मुक्ति

यही परिचय हमारा है, यही खूबी हमारी है।
भरोसा देश का ही तो बस पूंजी हमारी है।
ये कोशिश है कि सेवा दे सकें बेहतर सभी को हम,
इससे बढ़कर खुशी दूजी नहीं कोई हमारी है।

भारत के सभी कोनों में बसा परिवार हमारा है।
जहाँ तक भी नजर जाए वहाँ सेवा हमारी है।
सात दशकों से भी लंबा तय किया हमने सफर अब तक,
हमेशा हर जगह लोगों ने की सेवा स्वीकार हमारी है।

हमे गर्व है कि देश की सेवा का यही काम हमारा है,
समर्पित देश की सेवा से बना ये नाम हमारा है।
कामगारों को मिल सके आसानी से सभी सुविधाएं,
कई सालों की मेहनत का यही परिणाम हमारा है।

पहुचाएं सेवाएं सभी को हम और ये सफर यूँ हीं चलता रहे,
भरोसा हम पर लोगों का हमेशा यूँ हीं बढ़ता रहे।
तरक्की सभी कामगारों की हो ये शपथ हम लेते हैं,
सितारा ई.एस.आई.सी. का सदा यूँ हीं चमकता रहे।

कल्पेश पारीक
प्रवर श्रेणी लिपिक

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ

1. असमिया 2. उड़िया 3. उर्दू 4. कन्नड़ 5. कश्मीरी 6. गुजराती
7. तमिल 8. तेलुगू 9. पंजाबी 10. बंगला 11. मराठी 12. मलयालम
13. संस्कृत 14. सिन्धी 15. हिन्दी 16. मणिपुरी 17. नैपाली 18. कोंकणी
19. मैथिली 20. संथाली 21. बोडो 22. डोगरी

मिर्ज़ापुर

मिर्ज़ापुर... नाम सुनते ही वेब सीरीज का ख्याल आया न, जिसमें कालीन भैया, मुन्ना भैया और गुड्डू भैया की कहानी दिखाई गई है। हो भी क्यूं न.. दर्शकों के बीच यह इतनी लोकप्रिय जो है। लेकिन क्या आपको वास्तविक रूप से मिर्ज़ापुर के बारे में पता है। आखिर क्या है इस शहर का इतिहास और क्या है इसकी कहानी? कब स्थापित हुआ ये शहर और किसने कब तक राज किया?

इस लेख के माध्यम से आज हम मिर्ज़ापुर के इन सभी सवालों से पर्दा उठाएंगे, जिसके लिए आप भी शायद काफी समय से बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। लेकिन इसके पहले थोड़ा नजर मिर्ज़ापुर की विंध्य पर्वतमाला पर भी डाल लेते हैं, जिसका जिक्र पुराणों और वेदों में भी मिलता है। इस शहर में देश के 51 शक्तिपीठों में से एक माता विंध्याचल का भी निवास है। विंध्याचल मंदिर के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर में हर साल लाखों श्रद्धालु आते हैं। इसके अलावा इस शहर का इतिहास भी काफी रोचक है। तो आइए नजर डालते हैं इस शहर के इतिहास पर...

मिर्ज़ापुर की स्थापना

उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध जिलों में से एक मिर्ज़ापुर की स्थापना अंग्रेजी हुकूमत के द्वारा 17वीं शताब्दी में की गई थी। कहा जाता है कि 1735 ईस्वी में जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार भारत में (कलकत्ता से लेकर दिल्ली तक) तेजी से फैलने लगा था, तब उन्हें इस रास्ते के बीच में एक व्यापार केंद्र बनाने की आवश्यकता मालूम हुई तो अंग्रेजी अफसरों ने गंगा के किनारे वाले क्षेत्रों का अध्ययन किया। इस दौरान उन्हें गंगा के किनारे पर स्थित विंध्याचल पर्वत का यह क्षेत्र भा गया और फिर लार्ड मर्क्यूरियस वेलेस्ले नाम के एक ब्रिटिश अधिकारी ने इस शहर की स्थापना की और इसका नाम मिर्ज़ापुर (मिर्ज़ा का शाब्दिक अर्थ - राजाओं का क्षेत्र) रखा। इस शहर को मीरजापुर भी कहा जाता है। भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बसाए हुए कई शहर है, माना जाता है कि मिर्ज़ापुर उनमें से पहले स्थान पर है।

मिर्ज़ापुर का इतिहास

अधिकारिक रूप से मिर्ज़ापुर की स्थापना 1735 ईस्वी में की गई थी, लेकिन प्रमाण के रूप में 5000 हजार साल से भी अधिक पुराने कई साक्ष्य मिले हैं। इसमें पुरापाषाण काल की संस्कृति के प्रमाण, प्रागैतिहासिक काल में बनी गुफाओं की कलाकृतियां, बेलन नदी घाटी के चित्रित चट्टान इत्यादि शामिल हैं। इसके अलावा यहां कई ऐसे भी साक्ष्य मिले हैं, जो इसे 17000 ईसा पूर्व से अधिक पुराने बताए जाते हैं। प्राचीन समय में ये पूरा शहर जंगली इलाकों से भरा था, उस समय के राज्यों (बनारस, सक्तेशगढ़, विजयगढ़, नैनागढ़ (चुनार), नौगढ़, कांतित और रीवा) के राजा व शिकारी इसका इस्तेमाल शिकार करने के लिए किया करते थे। बाद में धीरे-धीरे मिर्ज़ापुर का विकास हुआ और ये कपास एवं रेशम का एक बड़ा व्यापारिक केंद्र बन गया। वर्तमान समय में यह कालीन व पीपल के व्यापार के लिए जाना जाता है। यहां का नगर निगम भवन भी ब्रिटिश काल का ही बना हुआ है। कहा जाता है कि इस शहर में परमार वंश और गहरवार वंश का शासन रहा है, जिनसे सम्बन्धित यहां कुछ ऐतिहासिक इमारतें व किले देखने को मिल जाएंगे।

पर्यटन

पर्यटन की दृष्टि से भी मिर्जापुर उत्तर प्रदेश का काफी महत्वपूर्ण जिला माना जाता है। यहां नैसर्गिक सुंदरता के साथ-साथ कई धार्मिक स्थल भी हैं जो पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सोनभद्र कभी मिर्जापुर का ही हिस्सा था, तब मिर्जापुर उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा जिला हुआ करता था। यहां धार्मिक, ऐतिहासिक व प्राकृतिक खूबसूरती की भरमार देखने को मिलेगी। मिर्जापुर (अमरावती चौराहा) से ही भारत का मानक समय निर्धारित होता है। मिर्जापुर अपने गुलाबी पत्थरों के लिए भी काफी विख्यात है। इन्हीं पत्थरों से मौर्य वंश के सम्राट अशोक ने सारनाथ में बौद्ध स्तूप एवं अशोक स्तम्भ बनवाया था।

(1) विंध्याचल मंदिर : पौराणिक मान्यता के अनुसार मिर्जापुर में विंध्य पर्वत पर स्थित विंध्याचल मंदिर एकमात्र ऐसा शक्तिपीठ है, जहां देवी के पूर्ण स्वरूप की पूजा की जाती है। कहा ये भी जाता है कि विंध्याचल माता की पहली बार पूजा 'मनु' ने की थी, जिसके बाद माता ने प्रसन्न होकर वंश वृद्धि का वरदान दिया था। शिवपुराण और मार्कण्डेय पुराण में भी इस शहर (विंध्याचल के रूप में) का जिक्र है।

(2) लखनिया वॉटरफाल : लखनिया वॉटरफाल एक प्रसिद्ध प्राकृतिक खूबसूरत जल प्रपात है जो मिर्जापुर के नजदीक स्थित है। यहां पर एक अद्भुत वातावरण मिलता है और प्रकृति की सुंदरता देखने को मिलती है। यह पहाड़ियों और घाटियों से घिरा हुआ है। लखनिया वॉटरफाल में आपको अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियां देखने को मिल जाएंगी। अगर आप मिर्जापुर घूमने का प्लान बना रहे हैं तो एक बार यहाँ जरूर जाएं।

(3)काली खोह: मिर्जापुर में स्थित काली खोह मंदिर माँ काली को समर्पित एक प्रसिद्ध हिंदू धार्मिक स्थल है। काली खोह मंदिर का नाम इस स्थल के आस-पास की खोह (गड्ढा) के कारण पड़ा है, जो काली देवी की पूजा के लिए प्रयोग किया जाता है। इस मंदिर में माँ काली की मूर्ति स्थापित है, जिसे भक्तजन विशेष भक्ति और समर्पण भाव से पूजते हैं। यहां प्रतिदिन माँ काली के भक्तों द्वारा आराधना और आरती की जाती है। विशेष त्योहारों और नवरात्रि के दौरान इस मंदिर में भक्तों की बड़ी भीड़ होती है और माता की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। काली खोह मंदिर के आस-पास एक शांतिपूर्ण वातावरण है, जिसमें घने वृक्ष और हरियाली शामिल है। मंदिर के पास धार्मिक यात्रा करने वाले लोग आनंदपूर्वक प्रकृति का आनंद लेते हैं और मन को शांत करते हैं। काली खोह मंदिर मिर्जापुर जिले के पर्यटन स्थलों में से एक है और धार्मिक महत्व के साथ-साथ प्राकृतिक सौंदर्य को भी दर्शाता है। यहां की आराध्य देवी काली के दर्शन के लिए लोग भारत और विदेशों से आते हैं।

सौरभ सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।"
भारतेन्दु हरीशचंद्र

रामभरोसे लोकतंत्र

इस बार जंगल में चुनाव थे। जंगल के नए संविधान में शेर को चुनाव लड़ने से वंचित कर दिया गया था। अब चुनाव के मैदान में एक तरफ भेड़िया और सियार की जोड़ी थी, दूसरी तरफ भालू की। जोर-शोर से प्रचार शुरू हुआ। भेड़िये और सियार की जोड़ी पूरे जंगल में "फिर से रामराज्य आएगा" के नारे गुंजायमान कर रही थी। वे बार-बार भगवान राम के वन में निवास और बाद में उनके अयोध्या में शासन की याद दिला रहे थे, उनका शासन ठीक वैसा ही होगा, यही उनके घोषणापत्र में भी सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था। जंगल के प्रवेश द्वार पर ही भगवान राम का एक भव्य मंदिर बनाया जाएगा, जिसके दर्शन करके हर जीव-जंतु राम के आदर्शों से सराबोर हो जाएगा। पूरी जनता श्रीराम की जय-जयकार करने लगी। स्वर्ग में बैठे श्रीराम भी कलयुग के एकमात्र अच्छे कर्म पर अचंभित थे, इसमें उनकी भी एक भूमिका है, ये जानकर स्वयं पर गौरवान्वित भी थे। बंदरों को लगा, अब उनके अच्छे दिन आने वाले हैं। श्रीराम के काल के बाद जंगल में उनकी इज्जत धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। इस अपमान से निराश होकर वो धीरे-धीरे जंगल त्याग किसी मंदिर, किसी पुराने खंडहर में शरण ले रहे थे। उन्हें आशा का एक प्रकाशपुंज दिख रहा था, उसके पीछे एक नया सवेरा दिख रहा था। उन्होंने जोर-शोर से भेड़िये और सियार की जोड़ी के लिए प्रचार करना प्रारंभ कर दिया। बंदरों ने भगवान श्रीराम की सहायता के बाद इतनी मेहनत और बुद्धिमत्ता कभी नहीं दिखायी थी। दूसरे दल का मुखिया भालू था। एक तो आलसी, दूसरा पहले से उसकी छवि खराब। ऐसे में होना क्या था, भालू चुनाव हार गया। जंगल में रामराज्य की स्थापना हुई। भेड़िये की सरकार बनी, सियार सलाहकार बना। बंदरों ने जय श्रीराम के नारे गुंजायमान किये। फिर क्या था। पूरे कार्यकाल सिर्फ नारे ही गुंजायमान हुए। बंदरों को सत्ता का समर्थन प्राप्त था, उन्होंने पूरे कार्यकाल खूब उत्पात मचाया। भेड़िये ने सत्ता सुख भोगा, सियार ने भी खूब शिकार किए। भगवान राम स्वर्ग में ही रहे, मंदिर में स्थापित होने की तमन्ना में नित्य सीता मैया से ताने सुनने लगे।

समय कहाँ रुकता है। चुनाव के दिन फिर आ पहुंचे। भेड़िये और सियार को मौज करते देख भालू रोज खुद पर कोफ्त करता। इस बार उसने आर या पार की लड़ाई लड़ने की सोची। शाकाहारी जंतुओं को एकजुट कर बंदरों की सेना से मुकाबला करने की ठानी। भेड़िये और सियार की सबसे बड़ी ताकत यही बंदर थे। वो परास्त, तो चुनाव हाथ में। लेकिन, बंदर भी कहाँ इतने आसानी से हार मानने वाले थे। इतने दिनों बाद सत्ता की शक्ति का स्वाद चख रहे थे। इस बार पिछले बार की दुगुनी शक्ति से प्रचार कर रहे थे। उधर भालू के पास न तो कोई अनुभव था और न ही कोई ठोस रणनीति। मामला फिर इस बार भेड़िये की तरफ ही जा रहा था। बंदरों का जोश उफान पर था। तभी भालू को भी एक तरकीब सूझी। उसने सुन रखा था किसी से कि लोहे को लोहा ही काटता है। बस फिर क्या था, उसने भी गेरुएँ वस्त्र पहने, कमंडल लिया और पास की एक ऊंची चोटी पर जा पहुंचा। लगा तपस्या करने। भेड़िये और सियार के तंबू में खलबली मच गई।

अब कुछ शिवभक्त बंदरों के भालू की तरफ टूट कर जाने का खतरा बन गया। दोनों तरफ से जोरदार तरह से "जय श्रीराम " और "बम भोले" के नारे गूंजने लगे। जनता इस बार दुगुनी हतप्रभ थी। कुछ समझ नहीं आ रहा था, क्या किया जाए। किसको चुना जाए। कोई जंगल की सुरक्षा की बात नहीं कर रहा था। आये दिन शहर से शिकारी आते और हिरणों का शिकार कर टांग के ले जाते। जंगलों के पेड़ काटे जा रहे थे, जंगल का विस्तार आधा हो गया था। चुनाव के शोरगुल में कोई इन सब की बात नहीं कर रहा था। फिर से रामराज्य के नारे में सब कुछ भक्तिमय हो रहा था। एक-दो खरगोशों ने इन सब मुद्दों पर दोनों के विचार जानने चाहे, बंदरों ने उन्हें नास्तिक-नास्तिक चिल्ला कर चुप करवा दिया। नास्तिक जंतुओं के लिए जंगल में कोई स्थान नहीं। ऐसा सुनते ही बेचारे खरगोश चुप हो गये। फिर से "जय श्रीराम" और "बम भोले" के नारे गूंजने लगे। फिर दोनों ने बारी-बारी से पचास साल तक शासन किया। तभी से उस जंगल का शासन रामभरोसे चल रहा है और वहां की जनता 'रामभरोसे' जनता कही जाती है।

राजीव शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

बढ़े चलो

कांटे हों या फूल बिछे हों,
राह न अपनी छोड़ो तुम ।
विपदायें आयें चाहे जो भी,
मुख को जरा न मोड़ो तुम ।

साथी साथ रहें या न रहें,
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम ।
मांगो न कृपा की भिक्षा,
दीन बन कर न जोड़ो तुम ।

रखो बस ईश्वर पर भरोसा,
पाठ प्रेम का पढ़े चलो ।
तन में जब तक जान बनी हो,
तब तक आगे बढ़े चलो ।

बढ़े चलो, बढ़े चलो।

प्रमोद कुमार मीना
सहायक

चैटजीपीटी और क्लाउड ए.आई.

आज के डिजिटल युग में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) ने हमारी दिनचर्या को काफी हद तक प्रभावित किया है। ए.आई.के कई प्रकार के मॉडल उपलब्ध हैं, लेकिन दो प्रमुख नाम जो इस समय चर्चा में हैं, वे हैं चैटजीपीटी और क्लाउड ए.आई.।

चैटजीपीटी

"चैटजीपीटी" को ओपन ए.आई.द्वारा विकसित किया गया है। यह एक भाषा मॉडल है जो मानव भाषा को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम है।

✦ विशेषताएँ :

1. व्यापक ज्ञान: चैटजीपीटी का परीक्षण विशाल डेटा सेट्स पर किया गया है, जिससे यह विभिन्न विषयों की जानकारी प्रदान कर सकता है।
2. प्राकृतिक बातचीत: यह मानव जैसी बातचीत के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे उपयोगकर्ता को एक सहज अनुभव मिलता है।
3. सीखना और सुधार: इसके अपडेट्स और नया परीक्षण इसे समय के साथ और बेहतर बनाते हैं।

✦ कमियाँ :

1. सटीकता: कभी-कभी चैटजीपीटी गलत या भ्रमित जानकारी प्रदान कर सकता है।
2. सीमित वास्तविक समय की जानकारी: यह अपने प्रशिक्षण डेटा पर आधारित होता है, इसलिए इसकी जानकारी में नवीनतम घटनाओं की कमी हो सकती है।

क्लाउड ए.आई.

यह एक नया और तेजी से विकसित हो रहा ए.आई.मॉडल है। इसे एंथरोपिक द्वारा बनाया गया है और इसका नाम क्लाउड एक प्रसिद्ध गणितज्ञ और दार्शनिक क्लाउड शैनन के नाम पर रखा गया है।

✦ विशेषताएँ

1. सुरक्षा और नैतिकता: क्लाउड ए.आई.को विशेष रूप से सुरक्षा और नैतिकता के दृष्टिकोण से डिज़ाइन किया गया है। इसका उद्देश्य गलत या हानिकारक जानकारी प्रदान करने से बचाना है।
2. उच्च गुणवत्तापूर्ण संवाद: यह भी मानव जैसी बातचीत को सक्षम बनाने पर केंद्रित है, लेकिन इसके डिजाइन में उपयोगकर्ता के अनुभव को बेहतर बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है।
3. सुसंगतता: क्लाउड ए.आई.में विभिन्न संभावित उपयोगी मामलों के लिए अनुकूलन और सुसंगतता को बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं।

✦ कमियाँ

1. विकास में कमी: यह नया मॉडल है इसलिए इसके पास सीमित सूचना और अनुभव है।
2. उपलब्धता: इसकी उपलब्धता सीमित हो सकती है, जो इसके उपयोग को प्रभावित कर सकती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

1. प्रस्तावित समाधान: दोनों ए.आई.मॉडल्स उपयोगकर्ता की बातचीत को स्वाभाविक और प्रभावी बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। हालांकि, क्लाउड ए.आई.की सुरक्षा और नैतिकता पर विशेष ध्यान दिया गया है, जबकि चैटजीपीटी के पास व्यापक डेटा सेट्स व निरंतर सुधार की प्रक्रिया है।

2. सटीकता और विश्वसनीयता: चैटजीपीटी के पास अधिक जानकारी हो सकती है, लेकिन इसकी सटीकता कुछ हद तक संदिग्ध हो सकती है। क्लाउड ए.आई.अधिक सुरक्षा और सुसंगतता पर केंद्रित है, जिससे इसकी जानकारी की विश्वसनीयता में सुधार हो सकता है।

3. उपयोग में आसानी: चैटजीपीटी ने लंबे समय से अपने उपयोगकर्ताओं को एक सहज अनुभव प्रदान किया है, जबकि क्लाउडए.आई.ने नए दृष्टिकोण और सुधारों के साथ उपयोगकर्ताओं के अनुभव को बेहतर बनाने की कोशिश की है।

अन्य ओपन ए.आई.टूल्स एवं उनके प्रयोग:

Bard LaMDa	किसी भी लेख से मुख्य विचार लेकर और आसानी से समझ में आने वाली अवधारणाओं के माध्यम से परिणाम दिखाकर लेखों को संक्षेप में प्रस्तुत करने में मदद करता है। बार्ड द्वारा लिखे गए सारांशों को फिर से लिखने और उन्हें अधिक पठनीय और परिष्कृत बनाने के लिए ए.आई.रीराइटर टूल का उपयोग भी कर सकते हैं।
AI Valley	एक साथ कई काम सकते हैं। इस ए.आई. की मदद से कॉपी राइटिंग, इमेज जनरेट व एडिट, कोडिंग, प्रोडेक्टिवीट आदि काम बिना ज्यादा समय खर्च किए कर सकते हैं।
Murf AI	सिर्फ टेक्सट लिख कर अपने लिए वॉयस ओवर जनरेट कर सकते हैं। यह सिर्फ 10 मिनट की मुफ्त वॉयस जेनरेशन और 10 मिनट के ट्रांसक्रिप्शन समय के साथ एक मुफ्त प्लान प्रोवाइड करता है।
Open AI API	माइक्रोसॉफ्ट के स्वामित्व वाले ओपन ए.आई.की मदद से आप इमेज जनरेशन और स्पीच को टेक्सट में बदलने के अलावा डाटा एक्सट्रैक्शन, ट्रांसलेशन आदि कर सकते हैं।
Midjourney	शानदार तस्वीर बना सकते हैं। यह ए.आई.टूल रियलिस्टिक तस्वीरों के साथ बहुत कुछ कर सकता है। हालांकि, इस टूल के कुछ एक्सेस ही मुफ्त हैं।
Synthesia	ए.आई. जनरेटेड वीडियो बना सकते हैं। इसके लिए स्क्रिप्ट अपलोड करनी होगी और आपको ए.आई. एंकर के साथ वीडियो बनकर मिल जाएगा। हालांकि, शुरुआत में यह मुफ्त है।
Soundraw	म्यूजिक जनरेट करने के लिए साउंडरॉ एक शानदार टूल है।
Slides AI	इस ए.आई. टूल की मदद से आप कई घंटो का काम सिर्फ मिनटों में कर सकते हैं। इससे लंबी प्रजेंटेशन को जल्दी ही बनाया जा सकता है।
El AI	यह भी एक वीडियो जनरेटर टूल है। इसकी मदद से ए.आई. वीडियो एंकर के साथ अपने चैनल के लिए वीडियो बना सकते हैं।

दिपाली असनानी
सहायक

कार्यालय में कामकाजी माहौल को बेहतर बनाने के लिए अपनाएं ये टिप्स

नये कार्यालय में पहले दिन आपका स्वागत होगा यह तय है, लेकिन आगे की राह आसान तब होगी जब आप टीम के साथ मिलजुल कर चलेंगे। अब आप एक नयी कार्य संस्कृति का हिस्सा बनने जा रहे हैं। नये ऑफिस में बॉस की अपेक्षाओं पर खरा उतरना है और टीम के लोगों के साथ मधुर व्यवहार बनाना है। नये कार्य-स्थल पर सहकर्मियों और बॉस का भरोसा जीतने के लिए कुछ टिप्स आपके काम आ सकते हैं।

- ✦ नई जगह पर न तो पूरी तरह मित्रवत व्यवहार रखें और न अलग-थलग रहें। बेहतर हो कि एक पेशेवर की तरह व्यवहार करें।
- ✦ कुछ दिन अच्छे श्रोता बन कर देखें, माहौल को परखें, सहकर्मियों को जानें और अपने काम पर ध्यान केंद्रित रखें।
- ✦ आप कितने भी मुखर, सहज और स्पष्टवादी हों, नये कार्यालय में अपने व्यवहार में संयम और संतुलन बनाएं। अपने परिवार या कार्य के बारे में उतनी ही जानकारी दें, जितना पूछा जाए। बढ़-चढ़ कर बताने की प्रवृत्ति नुकसानदेह साबित हो सकती है।

- ✦ पुराने कार्यालय की तारीफ या बुराई न करें। बेहतर हो कि वहां की कार्य प्रणाली या माहौल के बारे में नये सहकर्मियों से बातचीत न करें।
- ✦ सकारात्मक दृष्टिकोण ही वह चीज है, जो नये माहौल में आपको संतुलित बनाए रख सकती है। जो भी काम दिया जाए, उसे तत्परता और उत्साह से तय समय पर पूरा करने की कोशिश करें। अगर कुछ समझ में नहीं आ रहा तो चुप बैठने के बजाय संबंधित व्यक्ति से मदद लें। यह न सोचें कि इससे गलत प्रभाव पड़ेगा।
- ✦ अपने व्यक्तित्व और शारीरिक भाव-भंगिमा पर ध्यान दें। पेशेवराना वेशभूषा अपनाएं।
- ✦ कई बार लोग शिकायत करते देखे जाते हैं कि उन्हें काम नहीं दिया गया या वे उतना ही करेंगे, जितना कहा जाएगा। जिम्मेदारी उसी को दी जाती है, जो इसे लेने को तत्पर रहता है। आगे बढ़ कर काम करें और उसकी जिम्मेदारी लें।
- ✦ कार्यालय की राजनीति या गपशप का हिस्सा न बनें। अगर आपके सामने कोई ऐसी चर्चा करे भी तो वहां से निकल जाएं या अपना ध्यान काम पर केंद्रित करने की कोशिश करें।
- ✦ आप कितना भी अच्छा काम क्यों न करते हों, अगर वह समय पर पूरा न हो तो उसका प्रभाव खत्म हो जाता है। इसलिए हर कार्य को निर्धारित समय पर पूरा करें।
- ✦ सराहना करना सीखें। नये ऑफिस में ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जो आपके मार्गदर्शक या परामर्शदाता की भूमिका निभाते हैं। उनकी सराहना करें।

अभय कुमार
सहायक

आभासी वास्तविकता (वी.आर.)और संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.)

आभासी वास्तविकता (वी.आर.) और संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) दोनों ही डिजिटल दुनिया को हमारी वास्तविक दुनिया के साथ जोड़ने वाली टेक्नोलॉजी हैं, लेकिन ये दोनों अलग-अलग अनुभव प्रदान करती हैं। आइये, तस्वीरों के साथ इन दोनों तकनीकों को और अच्छे से समझते हैं:

1. आभासी वास्तविकता (वी.आर.)

आभासी वास्तविकता (वी. आर.) एक पूरी तरह से कृत्रिम दुनिया बनाती है, वी.आर. हेडसेट पहनने पर आप खुद को उस डिजिटल दुनिया में पाते हैं, जहाँ आप इधर-उधर घूम सकते हैं, वस्तुओं के साथ बातचीत कर सकते हैं और पूरी तरह से डिजिटल वातावरण में डूब सकते हैं। वी.आर.का इस्तेमाल कई क्षेत्रों में किया जा सकता है, जैसे :-

✦ मनोरंजन : वी.आर.गेम आपको एक अलग ही दुनिया में ले जाते हैं जहाँ आप रोमांचक कारनामों का अनुभव कर सकते हैं।

✦ शिक्षा : वी.आर.का उपयोग करके छात्र ऐतिहासिक घटनाओं को करीब से देख सकते हैं और दुर्गम स्थानों की यात्रा कर सकते हैं।

✦ डिजाइन और निर्माण : वास्तुकार और इंजीनियर, इमारतों और उत्पादों को डिजाइन करने से पहले वी.आर.का उपयोग करके उनका वर्चुअल दौरा कर सकते हैं तथा पायलटों, सर्जनों और सैनिकों को सुरक्षित वातावरण में प्रशिक्षित किया जा सकता है।

✦ चिकित्सा : वी.आर.का उपयोग दर्द और फोबिया उपचार में किया जा सकता है।

✦ प्रौद्योगिकी : वी.आर.हेडसेट एक विशेष चश्मा होता है, जिसमें हाई-डेफिनिशन डिस्प्ले और मोशन ट्रैकिंग सेंसर होते हैं। ये सेंसर आपके सिर की गतिविधियों को ट्रैक करते हैं और उसी के अनुसार डिजिटल दुनिया को अपडेट करते हैं, जिससे आपको एक यथार्थवादी अनुभव मिलता है। कुछ वी.आर. हेडसेट में अतिरिक्त नियंत्रक भी होते हैं, जिनका उपयोग वी.आर. दुनिया में बातचीत करने के लिए किया जा सकता है।

✦ सीमाएं : वी.आर.तकनीक अभी भी विकास के दौर में है। कुछ लोगों को वी.आर.हेडसेट पहनने से मोशन सिकनेस हो सकती है और इसके अलावा, हाई-एंड वी.आर. सिस्टम काफी महंगे हो सकते हैं।

2. संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.)

संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) वास्तविक दुनिया को डिजिटल तत्वों के साथ जोड़ती है। ए.आर.चश्मा या स्मार्टफोन कैमरा का उपयोग करके, आप डिजिटल जानकारी, छवियां या 3डी मॉडल को अपनी वास्तविक दुनिया में देख सकते हैं।

ए.आर.का इस्तेमाल कई क्षेत्रों में किया जा सकता है, जैसे:

- ✦ डिजाइन : ए.आर.का उपयोग करके आप देख सकते हैं कि कौनसा फर्नीचर आपके घर के लिए उपयुक्त रहेगा।
- ✦ शिक्षा : इसके उपयोग से छात्र किसी वस्तु के बारे में अतिरिक्त जानकारी देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी पौधे की ओर कैमरा करने पर उसकी प्रजाति के बारे में जानकारी सामने आ सकती है या छात्र किसी विषय को सीखते समय इंटरैक्टिव 3डी मॉडल देख सकते हैं।
- ✦ निर्माण : इसका उपयोग करके दीवारों पर निर्माण का डिजिटल ब्लूप्रिंट देख सकते हैं।
- ✦ दुकानदारी : ए.आर. के उपयोग से किसी उत्पाद को देख सकते हैं इससे पहले कि आप उसे खरीदें।
- ✦ चिकित्सा : इसके उपयोग से सर्जन ऑपरेशन के दौरान रोगी की एनाटॉमी को देख सकते हैं।
- ✦ प्रौद्योगिकी : ए.आर. डिवाइसों में आम तौर पर स्मार्टफोन या स्मार्ट चश्मा शामिल होता है। कैमरे और सेंसर्स का उपयोग करके, ए.आर. डिवाइस वास्तविक दुनिया की छवियों को कैप्चर करते हैं और फिर उन छवियों के ऊपर डिजिटल जानकारी या ग्राफिक्स को ओवरले करते हैं।
- ✦ सीमाएं : ए.आर. तकनीक अभी भी अपेक्षाकृत नई है और निरंतर विकास में है। कई ए.आर. डिवाइसों में बैटरी लाइफ कम होती है और कुछ उपयोगकर्ताओं को स्क्रीन पर डिजिटल ओवरले देखने में परेशानी हो सकती है, इसके अलावा, डेटा सुरक्षा ए.आर. अनुप्रयोगों के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

अतः वी.आर.पूरी तरह से एक कृत्रिम दुनिया बनाता है, जबकि ए.आर. वास्तविक दुनिया को डिजिटल तत्वों के साथ जोड़ता है। वी.आर.अधिक गहन अनुभव प्रदान करता है, जबकि ए.आर. को दैनिक कार्यों के लिए अधिक व्यावहारिक अनुप्रयोग माना जाता है। वी.आर.का उपयोग वर्चुअल बैठकों और कक्षाओं के लिए किया जा सकता है। ए.आर. का उपयोग दैनिक जीवन के विभिन्न कार्यों में किया जा सकता है, जैसे नेविगेशन, अनुवाद और जानकारी प्राप्त करना। वी.आर.और ए.आर. दोनों ही तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्र हैं और भविष्य में इनमें काफी संभावनाएं हैं। आने वाले वर्षों में हम वी.आर.और ए.आर. उपकरणों को अधिक किफायती, हल्के और अधिक शक्तिशाली होते हुए देख सकते हैं।

भीखाभाई परमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

लगा रहे प्रेम हिन्दी में, पढ़ूँ हिन्दी-लिखूँ हिन्दी,
चलन हिन्दी चलूँ, हिन्दी पहरना, ओढना-खाना।
भवन में रोशनी मेरे हिन्दी चिरागों की,
स्वदेशी ही रहे बाजा, बजाना, राग का गाना।

रामप्रसाद बिस्मिल

स्वच्छता का महत्व

महात्मा गाँधी ने भारत को एक निर्मल और स्वच्छ देश बनाने का सपना देखा था। उसी विचार को आगे बढ़ाते हुए हमारे देश में अनेक स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। 'स्वच्छता' शब्द में 'स्वच्छ' शब्द का अर्थ है- अत्यंत साफ, विशुद्ध एवं उज्जवल और 'ता' प्रत्यय जोड़ने पर भाववाचक शब्द 'स्वच्छता' का आशय सब प्रकार से साफ-सफाई, निर्मलता एवं पवित्रता है। स्वच्छता एक अच्छी आदत है जिसे हमें अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन के लिए अपनाना चाहिए। स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्पूर्ण हिस्सा है। आज की भाग-दौड़ और तनाव भरे जीवन में न तो हम खुद स्वच्छता पर ध्यान देते हैं और न ही हम इसके महत्व को समझते हैं। इसके महत्व को समझना और अपनाना हमारे लिए अति आवश्यक है ताकि आने वाले समय में हम और हमारी पीढ़ियाँ इसके दुष्परिणाम से बच सकेंगे। छोटी-छोटी आदतों से हम स्वच्छता को अपने जीवन का एक हिस्सा बना सकते हैं, जैसे कचरा इधर-उधर ना फेंकें, पानी व बिजली बचाएँ, सड़कों-दीवारों पर ना थूकें, प्लास्टिक की थैली का उपयोग जहां तक संभव हो सके ना करें, पेड़-पौधे लगाएँ, स्वच्छता बनाए रखें, पुन: उपयोग एवं पुनर्चक्रण की आदत को अपनाएं इत्यादि। स्वच्छता का सीधा संबंध हमारी सभ्यता एवं स्वास्थ्य से है। खान-पान में स्वच्छता रखने से शरीर स्वस्थ रहता है। घरों के आस-पास, सड़कों, नालियों, पोखरों, नदियों आदि में गंदगी न फैलने से सारा वातावरण स्वच्छ रहता है। इससे रोगाणु नहीं पनपते हैं, कई तरह के रोग नहीं फैलते हैं, जल एवं वायु में शुद्धता रहती है। फलस्वरूप मानव तथा अन्य प्राणियों की आयु एवं स्वास्थ्य का स्तर बढ़ जाता है।

स्वच्छता का मुख्य उद्देश्य केवल स्वच्छता के बारे में जागरूक होना नहीं है बल्कि हमें इसे अपने जीवन में अपनाना भी है और साथ-साथ दूसरों को इस तरह की अच्छी आदतों के प्रति जागरूक करना भी है। अगर सही मायनों में हमें भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का बढ़ावा देना है तो हमें एक स्वस्थ जीवन शैली को अपनाना होगा। कूड़े-करकट, गंदगी को रोकना होगा ताकि हमारे साथ-साथ अन्य जीव-जंतुओं को भी नुकसान न पहुँचें और साथ ही हमारी पृथ्वी भी प्रदूषित होने से बचे। इस कूड़ा-करकट और गंदगी के कारण विदेश से लोग हमारे देश में आना कम ही पसंद करते हैं, जिसके कारण हमारे देश को आर्थिक नुकसान भी होता है। इस गंदगी के जिम्मेदार भी हम और आप ही हैं क्योंकि हमलोग भी कभी जानबूझकर और कभी अनजाने में कहीं भी कचरा फेंक देते हैं। हमें इस मानसिकता को बदलना होगा। अभी मैं कर्मचारी राज्य बीमा निगम में कार्यरत हूँ। हम और आप सभी जानते हैं कि हमारा कर्मचारी राज्य बीमा निगम श्रमिकों व कामगारों के चिकित्सीय स्वास्थ्य के लिए कार्य करता है तो यह मेरे लिए और मेरे संस्थान के सभी सदस्यों लिए अत्यंत आवश्यक है कि हम स्वच्छता से जुड़े सभी मानकों को समझें और इनकी जानकारी अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाएं। हमारे निगम में हर वर्ष स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम मनाया जाता है ताकि हम स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूक बने रहें। अंत में मैं यही कहूंगा यदि हम स्वच्छता को अपने जीवन का एक हिस्सा बना लें तो वह दिन दूर नहीं जब भारत का सिर्फ एक शहर ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत स्वच्छ हो जाएगा। इस प्रकार हम 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' के सपने को भी साकार कर सकते हैं।

विशाल सौरव
बहुकार्यकर्मी

लड़कपन

शैलेश अपने दोस्त छगन के साथ ढाबे पर कटिंग चाय की गरमा-गरम चुस्कियाँ लेते हुये अपनी शानदार और जबरदस्त स्प्लेंडर बाइक के बारे में बता रहा होता है कि तभी उसका दोस्त राजू टोपीवाला अपने भाई गज्जू टोपीवाला के साथ वहाँ आ जाता है। राजू, शैलेश को बहुत दिनों के बाद देखकर काफी खुश होता है और अपने भाई गज्जू से भी मिलवाता है। इतने में छगन राजू से पूछ लेता है कि “क्या भाई, नाम से टोपीवाला हो तो क्या टोपी पहनकर ही घूमते रहोगे?” जिसे सुनकर सब ठहाके मार-मार कर हंसने लगते हैं।

शैलेश, राजू और गज्जू के लिए एक-एक चाय मंगवाता हैं और इतने में आसमान में बदली छा जाती है और हल्की-हल्की बूंदाबांदी होने लगती है। सुहाना मौसम देखते हुये छगन गीत गाने लगता हैं, “आज मौसम..बड़ा बेईमान है बड़ा बेईमान है आज मौसम..।”

तभी गज्जू कहता हैं कि “काफी फिल्मी मालूम होते हैं छगन, क्या बात है?”

इतने मे शैलेश भी बोल देता है, “फिल्मों का दीवाना है अपना छगन तो, इसको तो जब देखो फिल्मीपना ही चढ़ा रहता हैं, वैसे कौनसी फिल्म लगी है आजकल सिनेमाघर में छगन।”

छगन- “अवेंजर्स, अँग्रेजी फिल्म हैं एकदम गजब।”

राजू- “हाँ, सुना है बहुत अच्छी है।”

गज्जू- “हाँ भैया, खूब धमा चौकड़ी है उसमें, मज़ा आ जाए देखने को मिल जाए तो।”

शैलेश- “ऐसा क्या, तो फिर चलो, अभी देखने चलते हैं।”

राजू- “ठीक है तुम दोनों जाओ, हम घर चलते हैं।”

शैलेश- “क्या बात करते हो राजू तुम भी, इतने दिनों बाद मिले हो। चलो साथ में फिल्म देखने चलते हैं।”

राजू- “पर कैसे, तुम्हारे पास तो गाड़ी है पर हम तो पैदल ही हैं ना और टिकिट कितना महंगा है, पता भी है?”

छगन-“राजू, भाई की बाइक नहीं देखी क्या। बड़े आराम से चारों को उठा ले जाएगी।”

शैलेश (गाड़ी की चाभी और मोबाइल निकालते हुए)– “हाँ और टिकिट की फिक्र ना करो, पहचान है मेरी पास के सिनेमाघर के टिकिट प्रभारी से। अभी बात करता हूँ।”

गज्जू – “चलते है भैया, फिर न जाने कब फिल्म देखना नसीब हो।”

राजू- “चलो ठीक है, पर तुम्हारे पास तो हेलमेट भी नहीं है, अगर पुलिस ने पकड़ लिया तो तुम लोग जानो भाई।”

इतने में शैलेश गाड़ी में चाभी डालकर उसे चालू करते हुए,“फिक्र मत कर राजू, चलो बैठो छगन।”

छगन के बैठते ही उसके पीछे राजू भी बैठ जाता है, शैलेश सिनेमाघर के टिकिट प्रभारी का नंबर मिलाता है, घंटी बजने लगती है तब तक गज्जू भी खुद को वाहन के अंतिम हिस्से में किसी तरह समायोजित कर लेता हैं। गाड़ी में गियर डालते हुए शैलेश उसे भगाना

आरंभ करता हैं। इतने में टिकिट प्रभारी मोबाइल उठा लेता है।

शैलेश– “शैलेश बोल रहा हूँ, पहचाना ?”

टिकिट प्रभारी- “नहीं, नंबर सेव नहीं है। कहाँ से बोल रहे हो ?”

छगन– “आगे पुलिस है, घूमा भाई घूमा।”

शैलेश- “पिछले हफ्ते ही तो मिले थे, मैं शैलेश, यादव जी के पड़ोस में जो रहता था, अब याद आया?”

राजू- “किधर देख रहे हो तुम ?”

टिकिट प्रभारी- “हाँ हाँ, अरे शैलेश ! कैसे हो तुम और फोन कैसे किया ?”

शैलेश– “अच्छा हूँ...वो मैं... ।” शैलेश पुलिस को देखते ही दूसरी दिशा में गाड़ी भगाने लगता है।

छगन- “पुलिस पीछे-पीछे आ रही है ?”

राजू- “हाँ, इसीलिए मैं पहले ही मना कर रहा था।”

गज्जु- “भैया, मैं तो सबसे पीछे हूँ, पुलिस मुझे डंडा ना मार दे।”

राजू (टोपी से मुँह छुपाते हुए)- “पहले सोचना चाहिए था ना, शैलेश तेज़ भगा चल।”

टिकिट प्रभारी- “शैलेश !”

शैलेश (गाड़ी तेज़ करते हुए)- “हाँ...हाँ...वो अवेंजर्स की टिकिट मिल जाएगी? मैं कुछ दोस्तों के साथ फिल्म देखने आ रहा हूँ।”

टिकिट प्रभारी- “मिल तो जाएगी पर ये पुलिस की गाड़ी की आवाज़ बहुत जोर से आ रही है, कहाँ से बात कर रहे हो तुम ?”

छगन- “भाई, और तेज़ कर।”

शैलेश- “पुलिस का क्या है, हर जगह परेशान करने पहुंच जाती है।”

राजू- “आगे खाई है, किधर भगाये जा रहे हो ?”

गज्जु- “आगे से दायें कट मारेंगे तो सीधे सिनेमाघर पहुँच जाएंगे, पुलिस भी पीछे छूट जाएगी।”

टिकिट प्रभारी- “हा..हा..हा..क्या हुआ? पुलिस पीछे पड़ गई क्या फिर से?”

राजू- “संभलकर, बारिश के पानी में फिसलन बहुत रहती हैं।”

छगन- “अरे, ये कहाँ जा रही हैं गाड़ी, रोको..रोको..रोको.. इसे.. ।”

शैलेश- “लगा तो रहा हूँ ब्रेक...”

टिकिट प्रभारी- “शैलेश? हैलो।”

गज्जु- “मर गये रे.. ।”

गाड़ी फिसल जाती है और खाई में गिर जाती है।

टिकिट प्रभारी- “शैलेश..? शैलेश....? हैलो.......?”

अमन अलखनियाँ
प्रवर श्रेणी लिपिक

भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिन्दी भाषा कुछ न कुछ सर्वत्र समझी जाती है।
पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार

महाबलेश्वर - एक रमणीय यात्रा

सह्याद्रि पर्वत श्रृंखला की हरी-भरी हरियाली के बीच एक रमणीय पर्वतीय स्थल है जिसे महाबलेश्वर के नाम से जाना जाता है। यह धुंध भरी सुबहों की भूमि है जहां स्ट्रॉबेरी की सुगंध हवा में फैली है और घाटियों में झरनों की आवाज गूंजती रहती है।

महाबलेश्वर की हमारी यात्रा छः दोस्तों के साथ संकरी सड़कों पर घुमावदार ड्राइव के साथ शुरू हुई, जो घने जंगलों से घिरी हुई थीं और कभी-कभी नीचे विशाल घाटी की झलक दिखाई देती थी। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़े, हवा ठंडी होती गई और दृश्य अधिक मनमोहक होते गए। अपने गंतव्य पर पहुंचने पर, स्थानीय उत्पादों और स्मृति चिह्न बेचने वाली दुकानों से सजी हलचल भरी सड़कों ने हमारा स्वागत किया। ताजे फलों और फूलों के जीवंत रंगों ने हवा को जीवन शक्ति की भावना से भर दिया। हम कुछ रसदार स्ट्रॉबेरी का आनंद लेने से खुद को नहीं रोक सके, जो अपनी मिठास के लिए पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

आगे की खोज करते हुए, हम महाबलेश्वर के आसपास के हरे-भरे जंगलों में चले गए। घने जंगल, पक्षियों की चहचहाहट और पत्तों की सरसराहट से जीवंत थे। हमने घुमावदार पगडंडियों का अनुसरण किया जो हमें छिपे हुए झरनों तक ले गईं, जहां हमने तरो-ताजा करने वाली ठंडक महसूस की।

हमारी यात्रा का एक मुख्य आकर्षण पहाड़ियों में फैले प्रसिद्ध दृश्य बिंदुओं का दौरा करना था। आर्थर सीट से लेकर विल्सन पॉइंट तक, प्रत्येक ने हरियाली के समुद्र में लिपटे हुए नीचे के विशाल परिदृश्य का एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया। पहाड़ों पर डूबते सूरज के दृश्य ने आकाश को नारंगी और गुलाबी रंगों में रंग दिया, एक ऐसा दृश्य जिसने हमें प्रकृति की सुंदरता से आश्चर्यचकित कर दिया।

शाम को, हम अपने आरामदायक आवास में चले गए, जहाँ हमने गर्म चाय और स्थानीय सामग्री से तैयार स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। रातें झींगुरों की आवाज़ और ऊपर तारों की टिमटिमाहट से भरी होती थीं, एक शांत धुन जो हमें एक शांतिपूर्ण नींद में ले जाती थी।

हम इस रमणीय हिल स्टेशन से अपने रोमांच की संजोई यादों के साथ लौट आये। भले ही हमारी यात्रा समाप्त हो गई हो लेकिन महाबलेश्वर का जादू हमेशा हमारे दिलों में बना रहेगा, जो हमें वापस लौटने और एक बार फिर इसके चमत्कारों का अनुभव करने के लिए प्रेरित करेगा।

पवन कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी-भरी। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।
मैथिलीशरण गुप्त

आधुनिकता एवं पर्यावरण

मित्रों ! हम आज एक अत्याधुनिक भारत के स्वर्णिम भविष्य की ओर तेजी से प्रगतिशील हैं। प्रत्येक भारतीय की यह हार्दिक कामना है कि हम भारत को एक विकसित एवं आदर्श देश के रूप में विश्व पटल पर स्थापित होने के साक्षी बन सकें। यह शुभेच्छा हमें भारत के विकास में अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा से निष्पादित करने का मनोबल प्रदान करती है। परंतु मित्रों, परिवर्तन के इस कालखंड में हमें आधुनिकता एवं परिवर्तन की एक नवीन एवं परिशुद्ध परिभाषा की अत्यन्त आवश्यकता है। यह किंचित एक विचारणीय एवं चिंतित करने वाला विषय है कि हमारे भारतीय समाज ने आधुनिकता को पूर्ण रूप से पाश्चात्य जीवन शैली का पर्यायवाची निर्धारित कर लिया है।

हमारे देश के शहर जो भारतवासियों के विकास का स्वरूप होनें चाहिएँ, वे आज यूरोप अथवा अमेरिका के किसी अनुत्तरदायी रूप से संरचित उप शहरों जैसे प्रतीत होते हैं। एक उदाहरण के तौर पर हमारे देश की आर्थिक राजधानी मुंबई का स्वरूप देखिए। हमने अमेरिका के न्यूयार्क एवं शिकागो जैसे शहरों से प्रेरित होकर काँच की बहुमंजिला इमारतों का निर्माण मुंबई में किया। अमेरिका के ये शहर ठंडे क्षेत्रों में स्थित हैं जिसकी वजह से काँच की इमारतें ग्रीन हाउस के रूप में कार्य करती हैं एवं उनके आंतरिक तापमान को नियंत्रित करने में योगदान देती हैं परंतु हमारे जो शहर उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित हैं उनमें यह रचना विपरीत रूप से कार्य करती है एवं इन इमारतों में अत्यधिक तापमान का वातावरण बना देती है। इस तापमान को नियंत्रित करने के लिए हमें पुनः ऊर्जा एवं संसाधन को व्यर्थ उपयोग करना पड़ता है। हमारे एक पड़ोसी देश सिंगापुर के शहरों में वहाँ के लोगों ने अमेरिका की इन इमारतों की संरचना को हमारी तरह पूर्णरूपेण स्वीकार न करके अपने देश की भौगोलिक स्थिति के अनुसार उनको परिवर्तित करके हरित इमारत की संरचना का सृजन किया। इन इमारतों में प्रकृति को संरचना के साथ समावेशित किया जाता है एवं इमारत में पेड़-पौधों को संरचना का अभिन्न अंग बनाया जाता है। इसकी वजह से इमारत के अंदर का तापमान तो नियंत्रित होता ही है, साथ ही पर्यावरण में स्वच्छ प्राणवायु का भी समावेशन होता है। भविष्य के भारत के हमारे शहरों को हमें स्मार्ट शहरों के साथ-साथ हरित शहर बनाने की भी आवश्यकता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है परंतु यदि हम प्रकृति को ही परिवर्तित कर देंगे तो शायद कोई भी नियम मानवता की सहायता नहीं कर पाएगा।

अभिषेक तिवारी
प्रवर श्रेणी लिपिक

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।
डॉ. राजेंद्र प्रसाद

माँ

माँ के लिए लिखूँ मैं क्या?
ऐसे शब्द मुझे मिलते ही नहीं।
बिन माँ के मेरे इस जीवन में,
पुष्प सुखों के खिलते ही नहीं।

उस माँ को मैं क्या दे सकता हूँ?
जिसने मुझको अस्तित्व दिया।
मेरे कण-कण में जो बसा हुआ,
ऐसा मुझको जीवन-तत्व दिया।

जिसने मुझे पिलाकर अमृत,
मेरी इस देह में प्राण भरे।
खुद पीड़ा सहकर भी जो,
मेरे जीवन में अविरत प्यार भरे।

हो जाये पेड़ कितना भी बड़ा
जड़ें जुदा क्या हो सकती हैं?
माँ के हृदय से जुड़ा मेरा हृदय,
धड़कनें अलग क्या हो सकती हैं?

वो जो मेरी सृजनहार ना होती,
ना मैं होता, ना मेरे विचार होते।
उद्देश्य जीवन का जानने हेतु,
ना ख्वाब मेरे बेकरार होते।

जब तक माँ ने जन्म न दिया था,
इस जीवन से मैं बेखबर था।
था मेरा तो पूरा ब्रह्मांड वहाँ,
नौ महीने जहाँ मेरा घर था।

कल्पेश पारीक
प्रवर श्रेणी लिपिक

आओ पेड़ लगाएं

बहुत लुभाता है गर्मी में,
अगर कहीं हो बड़ का पेड़।
निकट बुलाता पास बिठाता,
ठंडी छाया वाला पेड़।

तापमान धरती का बढ़ता,
ऊंचा-ऊंचा, दिन-दिन ऊंचा।
झुलस रहा गर्मी से आंगन,
गांव-मोहल्ला कूंचा-कूंचा।

गर्मी मधुमक्खी का छत्ता,
जैसे दिया किसी ने छेड़।
ठंडा होगा जब घर-आंगन,
तभी बचेंगे मोर-बटेर।

तापमान जो बहुत बढ़ा तो,
जीना हो जाएगा भारी।
धरती होगी जगह न अच्छी,
पग-पग पर होगी बीमारी।

रखे संभाले इस धरती को,
अभी समय है, अभी न देर।
आओ पेड़ लगाएँ जिससे,
बढ़ता ताप गिरे देर-सवेर।

आओ पेड़ लगाएं जिससे,
धरती पर फैले हरियाली।
तापमान कम करने को है,
एक यही ताले की ताली।

हरकेश मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

शिलालेख

दीनू पत्थरों की मूर्तियां बनाने वाला कारीगर था। ये उसने कहीं से सीखा नहीं था, उसका पुश्तैनी रोजगार था। उसके पिता अपनी मूर्तियों के शिल्प के लिए पूरे इलाके में प्रसिद्ध थे। उनकी बनाई मूर्तियां दूर-दूर तक जाती थीं। एक बार तो राज्य की विधानसभा में लगाये जाने के लिए भी एक मूर्ति उनसे बनवाई गई थी। दीनू के पिता तो चल बसे लेकिन उनकी बनाई मूर्तियां आज भी जहाँ हैं, उनकी शानो-शौकत बढ़ा रही हैं। दीनू ने अपने पिताजी के साथ ही सारी कारीगरी सीखी थी। उसके हाथों में भी अपने पिता जैसी ही कारीगरी थी। लेकिन, समय अब पहले जैसा नहीं रह गया था। समय के साथ-साथ इस भौतिकवादी युग में कला को समझने वाले लोग भी कम हो गए। अब लोग कलाकृतियां खरीदने के लिए किसी कारीगर के यहां जाने के बजाय इंटरनेट पर खोजना और खरीदना अधिक आसान समझते थे।

दीनू के दो बच्चे थे, कालू और मुन्नी। दोनों मोहल्ले के सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। दीनू की पत्नी कमला घर का काम करके पति के काम में मदद करती थी। अब धीरे-धीरे मूर्तियों की मांग कम हो गई थी। लोग अब चीनी मिट्टी की बड़ी-बड़ी मूर्तियां सस्ते दामों में खरीद लेते थे। दीनू का धंधा मंदा पड़ गया था। अब महीने में इक्का-दुक्का मूर्तियां ही बिकती थीं और घर का गुजारा भी जैसे-तैसे चल ही रहा था। दिनों-दिन घर के हालात अब और खराब हो रहे थे। एक दिन उसके पास एक सरकारी अफसर आया। उसने उसे एक शिलालेख बनाने को कहा जो किसी नये बन रहे पुल का था और अगले हफ्ते मंत्रीजी उसका शिलान्यास करने आ रहे थे। अफसर ने कहा कि जल्दी से जल्दी ये शिलालेख बनके तैयार हो जाना चाहिए। मंत्रीजी ने बड़ी मुश्किल से इस बार समय निकाला है, नहीं तो ये कार्यक्रम कितनी ही बार टल चुका है। कुछ दिनों बाद राज्य के चुनाव हैं, मंत्रीजी भी जल्दी से जल्दी ये जरूरी काम निपटाना चाहते हैं, जब तक चुनाव की आचार संहिता नहीं लग जाती। इस पुल की घोषणा मंत्रीजी ने पिछले चुनावों में की थी, परंतु अब तक बन नहीं पाया है। नहीं बन पाया तो कोई बात नहीं, कम से कम इसका शिलान्यास तो कर दें! इसके पहले की सरकार ने तो अब तक ये भी नहीं किया था। आखिर पुल की मंजूरी, पैसे का आवंटन और इसे बनाने वाले ठेकेदार के लिए टेंडर, कितना समय लगता है इसमें, आम आदमी क्या जाने! उसे तो बस पुल चाहिए, पुल चाहिए चिल्लाने से मतलब है।

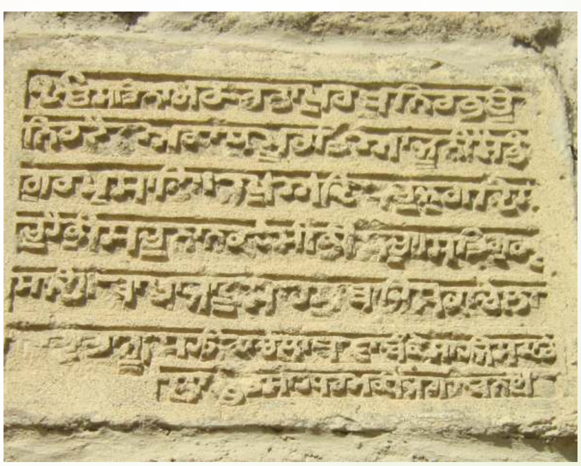

खैर, लौटते हैं दीनू की कहानी की तरफ। सरकारी अफसर ने उसे एक सप्ताह का समय दिया और शिलालेख पर लिखे जाने के लिए मंत्रीजी और अन्य माननीय जन के नाम लिख कर दे दिए। काम समय से हो जाये और कोई गलती न हो, ये हिदायत देकर अफसर साहब चले गये। दीनू ने तुरंत काम शुरू कर दिया। एक-एक दिन बीतता गया, शिलालेख अपना रूप लेता जा रहा था। उस पर लिखे मंत्रीजी और अन्य सभ्यजनों के नाम स्वर्णिम अक्षरों में उकेरते जा रहे थे। बीच-बीच में वह सरकारी अफसर भी आकर काम की प्रगति देख जाता था।

आखिर वो दिन आ ही गया, जिस दिन मंत्रीजी को आना था और उनके द्वारा पुल का शिलान्यास सम्पन्न किया जाना था। सवेरे ही सरकारी अफसर एक गाड़ी और कुछ मातहतों को लेकर दीनू के पास पहुंच गया। शिलालेख गाड़ी पर चढ़ाया गया और कार्यक्रम की जगह ले जाया गया। मंत्रीजी ने बड़े शान से शिलान्यास किया और अगले चुनाव तक पुल का काम पूरा हो जाने का भरोसा दिलाया। उन्होंने ये भी कहा कि ये काम सिर्फ वही कर सकते हैं, इसलिए आगे आने वाले चुनावों में इस बात का ख्याल रखा जाए। दीनू को तब तक शिलालेख की कीमत नहीं मिली थी। शिलालेख ले जाते समय अफसर ने कहा था कि उसका बिल विभाग में भुगतान के लिए रखा जाएगा और फिर उसे कीमत मिल जाएगी। दीनू के ये पूछने पर कि इसमें कितना समय लगेगा, जवाब मिला-लगभग एक महीना। दीनू फिर मूर्तियां बनाने में लग गया। उसने एक सप्ताह से शिलालेख के अलावा कोई और काम नहीं किया था। उसके पास बनी हुई और मूर्तियां भी नहीं थीं, जिसे बेचकर घर के खर्चे निकाले जा सकें। समय बीतता गया। एक महीना पूरा होने को आया, न अफसर आया न उसके पैसे। कमला रोज पूछती, पैसे कब मिलेंगे? घर के खर्चों में रोज तंगी हो रही थी।

एक दिन दीनू अफसर से मिलने उसके कार्यालय गया। अफसर ने बताया, आचार संहिता लग गई है, पैसे अब चुनाव के बाद मिलेंगे। दीनू घर लौट आया। दिन गुज़रते गए, लेकिन बदले नहीं और खराब होते गए। चुनाव भी बीता। मंत्रीजी फिर चुनाव जीत गए थे। पैसे की तंगी से दीनू की दुकान भी अब बंद हो गई थी। वह अब उसी पुल के काम में मजदूरी करता था। वहाँ भी कोई अच्छे हालात नहीं थे। ठेकेदार कई-कई दिन मज़दूरी नहीं देता था। कभी-कभी तो पूरा का पूरा सप्ताह चला जाता, पैसे न मिलते। दीनू के शिलालेख की कीमत अभी भी बाकी थी। इस बार मजदूरी मिले एक महीना गुज़र गया था। ठेकेदार रोज़ आता और बोलता- कल मिल जाएगा, फण्ड नहीं आया है। अब ये रोज़ की ही बात हो गयी थी। मुहल्ले के दुकानदारों ने भी सामान देने से मना कर दिया था। आज रात के खाने का कोई इंतज़ाम नहीं था। उसके कदम सड़क निर्माण के कार्यालय की तरफ बढ़ गए। आज वो किसी भी कीमत पर शिलालेख की कीमत लेकर ही लौटेगा। पता चला, उस अफसर का तबादला हो गया है। दूसरे साहब ने रजिस्टर देख कर बताया कि शिलालेख की मजदूरी तो दी जा चुकी है। दीनू के मना करने पर अफसर ने रजिस्टर में मजदूरी प्राप्ति के दस्तखत भी दिखाए। दीनू मना करता रहा, लेकिन आखिर प्रत्यक्ष को भी प्रमाण की जरूरत हुई है कभी? अब दीनू की रही सही आस भी टूट गई। घर में पैसे के नाम पर कुछ भी नहीं बचा था। कौन सा मुँह लेकर अब घर जाए। यहाँ शाम के खाने का इंतज़ाम कठिन हो रहा था। कैसे कमला का सामना कर पायेगा, क्या बताएगा? यही सोचते हुए वह सुन्न कदमों से घर की तरफ चला जा रहा था। धूप तेज़ थी, नंगे पांव जल रहे थे, आंखों के सामने अंधेरा सा छा रहा था। अचानक सामने से एक बड़ा ट्रक तेज़ी से आया और कब वो उसकी चपेट में आ गया, उसे कुछ पता नहीं चला। खून से लथपथ दीनू सड़क किनारे पड़ा हुआ था, उसकी आंखें मूंद रही थीं, उसकी आँखों के सामने अभी भी सड़क किनारे खड़ा वह शिलालेख दिख रहा था। उसकी आँखों के आगे कमला, कालू और मुन्नी के चेहरे तैरने लगे। साँसे उखड़ने लगीं। आस-पास भीड़ जमा हो गई। लोग उसके लिए अफसोस ज़ाहिर कर रहे थे। शिलालेख में स्वर्णिम अक्षरों में मंत्रीजी का नाम धूप में चमक रहा था।

राजीव शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

हिन्दी वह भाषा है, जो विभिन्न मातृ-भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।
डॉ.जाकिर हुसैन

हमें आगे बढ़ना है।

हमें आगे बढ़ना है,
रास्तों से नहीं डरना है,
पहाड़ों पर चढ़ना है,
हमें आगे बढ़ना है।

रास्तों में जो आए कठिनाई,
हमें करनी है उनसे खूब लड़ाई,
हौसलों को कम नहीं करना है,
हमें आगे बढ़ना है।

मंजिलें दूर नहीं अब हमसे,
बस खुद पर भरोसा रख कसम से,
अपने दम पर जीत जायेंगे ये जंग,
तब जिंदगी भी मुस्कुराएगी हमारे संग।

ताकत सारी झोंक देंगे,
कठिनाईयों की इस दरिया को रोक देंगे,
आएगी जब-जब हम पर बात,
पत्थरों से भी मजबूत हैं हमारे ज़ज्बात।

जिंदगी इसी तरह अब जियेंगे हम,
गम के आंसू अब नहीं पीयेंगे हम,
शूरवीरों की तरह अब लड़ना है,
हमें आगे बढ़ना है।

विशाल सौरव
बहुकार्यकर्मी

पुरुष
(हास्य कविता)

हे पुरुष ! तेरी यही कहानी,
हों दफ्तर में साहेब,
या फिर घर में बीवी,
तुझे डांट है खानी,
हे पुरुष ! तेरी यही कहानी।

सोम हो चाहे, चाहे मंगल,
तेरा मंगल, सदा अमंगल।
पर्वत चाहे पीस दे तू,
पीस दे चाहे पानी,
हे पुरुष ! तेरी यही कहानी।

फिर भी अपयश से बच न पायेगा,
लड़ के दोनों से तू क्या खायेगा !
चेहरे पर मुस्कान धरो,
मन में सुमरो "जय भवानी"
हे पुरुष ! तेरी यही कहानी।

राजीव शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

चार धाम यात्रा

हिमालय में स्थित पवित्रतम हिन्दू तीर्थ परिपथों में छोटा चारधाम प्रसिद्ध है। ये भारत के उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल में उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग और चमोली जिलों में स्थित है और इस परिपथ के चार धाम यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ हैं। इनमें से बद्रीनाथ धाम, भारत के मुख्य चार धामों का उत्तरी धाम है। पहले इन धामों की यात्रा करना अत्यंत कठिन था। परंतु चीन के साथ युद्ध के बाद इस क्षेत्र में सैनिक गतिविधियों के बढ़ने के कारण सरकार द्वारा इस मार्ग को सुगम बना दिया गया है। बारिश के मौसम में यहां की यात्रा खतरनाक मानी जाती है क्योंकि उस समय भूस्खलन की संभावना अधिक रहती है। यह यात्रा माह मई-जून एवं अक्टूबर-नवंबर में करना उपयुक्त है।

मई, 2023 में मुझे माताजी, पिताजी एवं पत्नी के साथ इन चार धामों की यात्रा करने का सौभाग्य मिला। सर्वप्रथम यात्रा संबंधी सम्पूर्ण जानकारी संग्रहित की गयी, जिसमें यात्रा का उचित समय एवं आवश्यक सामान, आवागमन हेतु वाहन की अग्रिम बुकिंग, यात्रा हेतु पंजीकरण और केदारनाथ की यात्रा के लिए हेलिकॉप्टर की बुकिंग आदि शामिल थीं। हरिद्वार से यात्रा हेतु एक यात्रा एजेंसी पहले से अनुबंधित कर ली गयी। यात्रा हेतु आवश्यक सभी सामान जैसे गर्म कपड़े, बरसाती कोट, चिकित्सा किट, जूते, सूखे मेवे, अन्य खाद्य पदार्थों एवं सभी की आई.डी. सहित हम रवाना हुए। हरिद्वार में एक नजदीकी रिश्तेदार के घर विश्राम किया तथा शाम को 'हर की पौड़ी' में गंगा स्नान कर संध्याकालीन आरती में शामिल हुए। मान्यता है कि पवित्र गंगा में स्नान करके ही चार धाम की यात्रा शुरू करनी चाहिए।

अल-सवेरे हम अनुबंधित कार में यमुनोत्री के लिए रवाना हो गये। परंपरागत रूप से यमुनोत्री चार धाम यात्रा का पहला पड़ाव है। हरिद्वार के आगे अब लगातार पहाड़ों पर ही यात्रा करनी थी। प्रथम दिन हम 'बरकोट' पहुँचे और रात्रि विश्राम किया। उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में सूर्यास्त के बाद ड्राइविंग की अनुमति नहीं है। पहाड़ों पर रात्रि में यात्रा करना खतरनाक भी है। दूसरे दिन प्रातः हम जानकी चट्टी के लिए रवाना हुए। पहाड़ी संस्कृति एवं प्राकृतिक छटा को निहारते हुए हम जानकी चट्टी पहुँचे। जानकी चट्टी से यमुनोत्री के लिए 6 किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई है। आवागमन का एक ही रास्ता है जो काफी संकरा है। इसी से यात्री पैदल या खच्चर, पिट्ठू, पालकी पर जा भी रहे थे और आ भी रहे थे। इसके अलावा सँकरे मार्ग पर बारिश के कारण हुए कीचड़ एवं खच्चरों की आवाजाही ने रास्ते को और दुर्गम बना दिया था। फिर भी धार्मिक उन्माद में जयकारों के साथ हम आगे बढ़ते गये और अंततः यमुनोत्री धाम पहुँचे।

यमुना मंदिर का निर्माण जयपुर की महारानी गुलेरिया ने 19वीं शताब्दी में करवाया था। यह मंदिर सूर्य की बेटी और यमराज की जुड़वां बहन 'देवी यमुना' को समर्पित है। यमुना का उद्गम स्थल मंदिर से लगभग एक किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित यमुनोत्री ग्लेशियर है। यमुनोत्री मंदिर के समीप कई गर्म पानी के सोते अर्थात तप्तकुण्ड हैं जिनमें सूर्य कुण्ड प्रसिद्ध है। कहा जाता है अपनी बेटी को आशीर्वाद देने के लिए भगवान सूर्य ने गर्म जलधारा का रूप धारण किया। श्रद्धालु इसी कुण्ड में चावल और आलू कपड़े में बांधकर कुछ मिनट तक छोड़ देते हैं, जिससे यह पक जाता है। तीर्थयात्री पके हुए इन पदार्थों को प्रसाद-स्वरूप ले जाते हैं। सूर्य कुंड के नजदीक एक शिला है जिसको 'दिव्य शिला' के नाम से जाना जाता है। तीर्थयात्री यमुना देवी की पूजा करने से पहले इस दिव्य शिला का पूजन करते हैं। दर्शन कर हम वापस चल पड़े। वापसी में बारिश का सामना करना पड़ा। बारिश में नीचे उतरना अधिक दुष्कर कार्य था क्योंकि फिसलन भी बढ़ गयी थी। पिताजी और माताजी, खच्चर एवं पालकी से वापस नीचे पहुँचे और फिर हम गाड़ी में बैठकर रवाना हो गये।

रास्ते में पता चला कि पहाड़ के दरकने से आगे आवागमन बंद कर दिया गया है। इसलिए हमें जानकी चट्टी में ही रूकना पड़ा। इस यात्रा में इस तरह के व्यवधान कभी भी आ सकते हैं। बहरहाल सुबह लगभग 4 बजे रास्ता खुला और हम तुरंत बरकोट के लिए रवाना हो गये। वहाँ होटल पहुंचकर जल्दी से तैयार होकर 'उत्तरकाशी' के लिए रवाना हो गये जो 'गंगोत्री' धाम के लिए हमारा अगला ठहराव स्थल था।

एक तरफ दरकने वाले पहाड़ और दूसरी तरफ गहरी खाई जो आगे बढ़ने के साथ-साथ और गहरी होती जा रही थी। हालांकि चारों और नैसर्गिक छटा से परिपूर्ण नयनाभिराम दृश्य बिखरे थे। काफी रोमांचक अहसास था। संकरा रास्ता, गाड़ियों की अधिक संख्या तथा आने-जाने का एकल रास्ता होने के कारण बार-बार आवागमन बाधित हो रहा था। खाने का सामान हमारे साथ ही था जिससे न केवल हम बाहर के खाने से कमोबेश बचे हुए थे वहीं इससे समय की बचत भी थी। रास्ते में मौसमी फलों का भी आनंद लिया।

दोपहर बाद हम 'उत्तरकाशी' पहुँचे। होटल में थोड़ा आराम करने के बाद यहां के प्रसिद्ध भगवान विश्वनाथ मंदिर में दर्शन किए। उत्तरकाशी का अर्थ है 'उत्तर की काशी'। वाराणसी की तरह यह शहर भी गंगा तट पर स्थित है और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। यहां एक तरफ पहाड़ों के बीच बहती नदियां दिखती हैं वहीं दूसरी तरफ घने जंगल भी हैं।

अगले दिन हम उत्तरकाशी से रवाना हो गये। रास्ते में हम 'हरसिल' में रूके। हरसिल घाटी सघन हरियाली से आच्छादित है। पूरी घाटी में नदी-नालों और जल प्रपातों की भरमार है। हर कहीं दूधिया जल धाराएं इस घाटी का मौन तोड़ने में डटी हैं। नदी एवं झरनों के सौंदर्य के साथ-साथ इस घाटी के सघन देवदार के वन मनमोहक हैं। ढलानों पर फैले हिमनद भी देखने योग्य है। यहां के प्राकृतिक सौंदर्य को हमने कैमरे में कैद कर लिया। हरसिल की सुन्दरता को लोकप्रिय चलचित्र 'राम तेरी गंगा मैली' में भी दिखाया जा चुका है।

शाम को गंगोत्री पहुंचकर होटल में थोड़ा आराम किया। इसके बाद गंगोत्री धाम मंदिर के दर्शन किए। सफेद पत्थरों से निर्मित यह मंदिर देवी गंगा को समर्पित है और भागीरथी नदी के तट पर स्थित है। गंगोत्री भारत की पवित्र नदी 'गंगा' का उद्गम स्थल है। वस्तुतः 'गौमुख' गंगा का उद्गम स्थल है जो गंगोत्री मंदिर से आगे 19 कि.मी. की चढ़ाई पर है। गंगोत्री में गंगा को 'भागीरथी' के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर प्रांगण में देवी गंगा के अलावा यमुना, भगवान शिव, देवी सरस्वती, अन्नपूर्णा और महादुर्गा के छोटे-छोटे मंदिर भी बने हुए हैं। ऐसा माना जाता है कि 18वीं शताब्दी में गोरखा कैप्टन अमर सिंह थापा ने आदि शंकराचार्य के सम्मान में गंगोत्री मंदिर का निर्माण किया था। इसकी ऊंचाई लगभग 20 फीट है। जयपुर राजघराने के राजा माधोसिंह ने 1935 में इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया। फलस्वरूप मंदिर की बनावट में राजस्थानी शैली की झलक मिलती है। मंदिर के समीप 'भागीरथ शिला' है, माना जाता है कि उसी शिला पर बैठकर भागीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए कठोर तपस्या की थी।

अगले दिन सुबह भागीरथी नदी में स्नान पश्चात गंगोत्री के पुन: दर्शन कर गंगा के पवित्र जल को भरकर ले लिया और यहाँ से हम 'श्री केदारनाथ धाम' के लिए रवाना हुए। भागीरथी नदी के किनारे बने सड़क मार्ग पर चलते हुए प्रतीत हो रहा था जैसे हम भी उसके साथ-साथ बहे जा रहे हों। हमारा अगला पड़ाव 'गुप्तकाशी' था। प्राकृतिक छटा को निहारते हुए हम गुप्तकाशी पहुँचे और रात को वहीं रूके। अगले दिन 'शेरसी' से हेलीकॉप्टर की बुकिंग थी। सुबह हम 'शेरसी' स्थित हैलीपैड के लिए रवाना हो गये। जल्दी निकलने के बावजूद हम यातायात में फँस ही गये। गाडियाँ रेंग-रेंगकर चल रही थीं। लेकिन भगवत्कृपा से ठीक समय पर हैलीपैड पर पहुँच ही गये। इसलिए यातायात की भीड़ से बचने के लिए गुप्तकाशी या फाटा से हेलीकॉप्टर की बुकिंग करना श्रेयस्कर होता है।

बहरहाल हेलीकॉप्टर में बैठकर घनी और गहरी वादियों के ऊपर से हम उड़ चले। बड़े-बड़े झरने छोटे नालों जैसे प्रतीत हो रहे थे। केदारनाथ का पैदल यात्रा का सर्पाकार मार्ग भी दिखाई दे रहा था जिस पर चलने वाले यात्री कीड़े-मकौड़ों की तरह रेंगते हुए से नजर आ रहे थे। बादलों की क्यारियों में से गुजरते हुए बेहद रोमांचक अनुभव के साथ हम उस अद्भुत स्थान पर उतरे। केदारनाथ धाम समुद्र तल से 11,746 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। चारों तरफ बर्फ से आच्छादित हिमालय की ऊंची-ऊंची पहाड़ियों के विहंगम नजारों ने हमारा स्वागत किया। लग रहा था जैसे हम किसी अलौकिक स्थान पर पहुँच गये हैं।

विश्रामगृह में आवश्यक व्यवस्था पश्चात् गर्म कपड़े एवं बरसाती कोट पहनकर मंदिर में दर्शन के लिए कतार में लगे ही थे कि तभी धीरे-धीरे बारिश भी शुरू हो गयी। एक तो ठंड, ऊपर से बारिश। लगभग 2 घंटे बाद हमें बाबा के दर्शन हुए। पत्थरों से बने कत्यूरी शैली से बने इस मन्दिर के बारे में मान्यता है कि इसका निर्माण पाण्डवों के पौत्र महाराजा जनमेजय ने कराया था। कहा जाता है कि इस मन्दिर का जीर्णोद्धार आदि गुरू शंकराचार्य ने 8वीं ईस्वी में करवाया था। केदारनाथ मंदिर के बाह्य द्वार पर नंदी की विशालकाय मूर्ति है। वायुपुराण के अनुसार भगवान विष्णु ने मानव जाति की भलाई के लिए पृथ्वी पर निवास करने के लिए बद्रीनाथ में अपना पहला कदम रखा था। बद्रीनाथ में पहले भगवान शिव का निवास था, लेकिन उन्होंने नारायण के लिए इस स्थान का त्याग कर दिया और केदारनाथ में निवास करने लगे। इसलिए पंच-केदार यात्रा में भी केदारनाथ को अहम स्थान प्राप्त है।

केदारनाथ के समीप ही मंदाकिनी का उद्गम स्थल है। हमने मंदिर के पीछे स्थित भीम शिला के भी दर्शन किए। माना जाता है कि 2013 में हुई त्रासदी के दौरान मलबे के साथ यह शिला भी नीचे आई और ठीक मंदिर के पास आकर रुक गई। इस शिला की वजह से बाढ़ का पानी मंदिर को क्षति नहीं पहुंचा पाया। वहाँ के लोग इस शिला को भीम का रूप मानते हैं।

इसके बाद हमने खाना खाया और रात को जी.एम.वी.एन. के टेंट हाउस में रुके। रात का तापमान लगभग -10 डिग्री सेल्सीयस था जो हम जैसे गर्म लू के थपेड़ों के आदी राजस्थान वासियों के लिए बहुत अधिक था। इतनी ऊंचाई पर वायुदाब कम होने एवं ऑक्सीजन की कमी से रात्रि में पिताजी को साँस लेने में थोड़ी तकलीफ हुई। अगले दिन सुबह का नजारा तो और भी अद्भुत था। पहाड़ों पर जमी हुई बर्फ की सफेद चादर सूरज की रोशनी में नहाकर आँखों को चौंधिया रही थी। वहीं पहाड़ों की चोटियों पर पिघल रहे ग्लेशियर को देखना भी एक अलग ही अनुभव था। हम वापस लौटने के लिए हैलीपैड पर पहुँचे और श्री केदारनाथ के खूबसूरत एवं अद्भुत नजारों को मन और कैमरे में सँजोए हेलीकॉप्टर में बैठ गये। आध्यात्मिकता से परिपूरित उस अद्भुत अहसास का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता है, इसे केवल अनुभूत ही किया जा सकता है। बस ये कहा जा सकता है कि वहाँ जीवन में एक बार जरूर जाना चाहिए।

हैलीपैड से उतरकर हम प्रसिद्ध 'त्रियुगी नारायण' मंदिर के लिए रवाना हो गये। सौभाग्य से यह उसी रास्ते पर लगभग 5 किमी की ऊंचाई पर स्थित था। यह प्राचीन मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। माना जाता है कि यहाँ भगवान शिव का देवी पार्वती के साथ विवाह हुआ था। भगवान विष्णु ने इस दिव्य विवाह में पार्वती के भ्राता का कर्तव्य निभाया था, जबकि ब्रह्मा इस विवाहयज्ञ के आचार्य बने थे। आने वाले यात्री इस हवनकुण्ड की राख को अपने साथ ले जाते हैं और मानते हैं कि यह उनके वैवाहिक जीवन को सुखी बनाएगी। मंदिर में ब्रह्मशिला नामक पत्थर को दिव्य विवाह के वास्तविक स्थल के रूप में चिह्नित किया गया है। कहा जाता है कि पूरी दुनिया में इससे पुराना धार्मिक स्थल और कोई नहीं है। यह मंदिर, केदारनाथ के मंदिर की स्थापत्य शैली से मिलता-जुलता है। ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण आदि शंकराचार्य ने कराया था। आदि शंकराचार्य को उत्तराखंड क्षेत्र में कई मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। यहाँ पर हमने विधिवत् पूजा-अर्चना कर बही-खाते में हमारा नाम दर्ज करवाया।

वहाँ से रवाना होकर हम 'मास्टा' स्थित होटल में पहुँचे। अगले दिन सुबह हम 'बद्रीनाथ धाम' के लिए रवाना हुए। चारों ओर हरित संपदा से परिपूरित बलखाते पहाड़ी रास्तों ने फिर हमारा स्वागत किया। बद्रीनाथ का रास्ता अन्य तीनों धाम की तुलना में अधिक लंबा लेकिन बेहद खूबसूरत है। रास्ते में आने वाला जोशीमठ भी खूबसूरत स्थान है। शरद ऋतु में श्री बद्रीनाथ जी इसी मठ में आकर विश्राम करते हैं। यह उन चार मठों में से एक है जिसका निर्माण आदि शंकराचार्य ने किया था।

गगनचुंबी पहाड़, पहाड़ों के चारों तरफ छाये हुए घनघोर बादल, सघन हरियाली, सफेद दूध जैसे झरने और नीचे

बहती हुई अलकनंदा नदी ने अद्भुत दृश्यावली व्युत्पन्न कर दी थी। हॉलीवुड फंतासी फिल्मों के से दृश्य थे। प्रतीत हो रहा था जैसे स्वर्ग इससे सुंदर क्या ही होगा। शाम हो रही थी, तभी बारिश भी शुरू हो गयी। अब तो ये नजारे अविश्वसनीय लग रहे थे। प्राकृतिक खूबसूरती का आनंद लेते हुए हम बद्रीनाथ पहुँचे। जी.एम.वी.एन. के होटल में रूके। मंदिर वहाँ से 500 मीटर ही दूर था। हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। माताजी और पिताजी थोड़ा आराम करना चाहते थे। मैं पत्नी के साथ मंदिर की ओर चला गया। योजना थी कि यदि दर्शन का अवसर मिल जाएगा तो उनको भी बुला लेंगे। दर्शनों की स्थिति बनते देखकर माताजी और पिताजी को भी बुला लिया और हम सबने भगवान 'बद्रीनाथ' के दर्शन किए और आशीर्वाद लेकर वापिस होटल आ गये। बूँदाबाँदी अभी भी हो रही थी।

बद्रीनाथ समुद्र तल से लगभग 10,276 फीट की ऊंचाई पर है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है जो अलकनंदा नदी के तट पर नर और नारायण पर्वत के बीच स्थित है। ऐसी मान्यता है कि भगवान विष्णु इस स्थान पर ध्यानमग्न रहते हैं और उन्हें छाया प्रदान करने के लिए देवी लक्ष्मी ने बेर (बदरी) के पेड़ का रूप धारण किया। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण वैदिक काल में हुआ था जिसका पुनरूद्धार बाद में आदि शंकराचार्य ने 8वीं सदी में किया। कालांतर में जो मंदिर यहाँ बना उसका निर्माण लगभग दो शताब्दी पहले गढ़वाल राजा के द्वारा किया गया था। यह मंदिर शंकुधारी शैली में बना हुआ है, जिसके शिखर पर गुंबज है। इस मंदिर में नर और नारायण के अलावा लक्ष्मी, शिव-पार्वती और गणेश की मूर्ति भी है। यह एकमात्र धाम है जो चारधाम और छोटा चारधाम दोनों का हिस्सा है।

अगले दिन सुबह हम बद्रीनाथ से लगभग 04 किलोमीटर दूर 'माना गांव' गये। इस गांव में इंडो-मंगोलियन जनजाति निवास करती हैं। तिब्बत के पहले यह आखिरी भारतीय गांव है। इसे अब भारत के प्रथम गाँव के रूप में जाना जाता है। यहाँ एक चाय की दुकान पर भी चाय की प्रथम दुकान लिखा है। वास्तव में वहाँ की चाय उस दुकान के नाम की तरह विशेष थी। हम वहाँ व्यास गुफा भी गये जहां के लिए मान्यता है कि व्यास मुनि ने यहीं पर महाभारत को बोलकर भगवान गणेश से लिखवाया था। यहीं सरस्वती नदी का उद्गम स्थल भी है जिसके ऊपर प्राकृतिक भीम पुल भी स्थित है। गजब का नैसर्गिक दृश्य था। यहाँ से चलकर आगे हम अलकनंदा और भागीरथी नदी के संगमस्थल 'देवप्रयाग' पर रूके जहाँ 'गंगा' नदी को इसका नाम मिला। यह संगम स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गंगा का प्राकट्य स्थल देखकर मन अभिभूत था। वहाँ से हम ऋषिकेश के लिए रवाना हुए।

इस यात्रा के बीच आने वाले सभी स्थल दर्शनीय थे। मन कर रहा था कि यहीं रुक जाएं। समयाभाव के कारण अधिक समय तक रूकना संभव नहीं हो पाता है। मार्ग में नैसर्गिक संपदा एवं वातावरण से परिपूरित हरेक स्थान को जीया जाए तो इस यात्रा में महीनों लग सकते हैं। चार धाम के साथ 'यात्रा' शब्द इसमें होने वाली लगातार और दूरगामी यात्रा की वजह से ही जुड़ा प्रतीत होता है। अंततः प्राकृतिक, अद्भुत एवं अविश्वसनीय नजारों से सरोबार रोमांचक यात्रा की मधुर यादों को कैमरे के साथ-साथ मन में भी हृदयांकित करके हम 10 दिनों के बाद पहाड़ों से उतरकर ऋषिकेश पहुँचे और माँ गंगा में डुबकी लगाकर इस अलौकिक यात्रा का समापन किया।

अमित इन्दौरिया
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

हिन्दी वह भाषा है, जो विभिन्न मातृ-भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।
डॉ.जाकिर हुसैन

पिता

पिता शब्द बहुत ही प्यारा शब्द है। कोई इन्हें बाबूजी तो कोई पापाजी या डैडीजी कह कर सम्बोधन करता है। ये पिता शब्द इतना प्यारा है कि इस शब्द के पीछे सभी शब्द पीछे छूट जाते हैं। तभी तो पिता अपनी सारी उम्र अपने संतान की खुशी के लिए कुर्बान कर देता है और अपनी सारी खुशियाँ, ख्वाहिशें, सपने आदि सब कुछ न्योछावर कर देता है। किसी ने सही कहा है कि ज़िंदगी में बादशाही पैसों से नहीं बल्कि माता-पिता के साये से मिलती है। यदि उनका साया संतान के ऊपर नहीं हो तो ज़िंदगी बिखर सी जाती है क्योंकि हमारे लिए सच्ची दुआ करने वाला कोई नहीं होता है। हमारे लिए दुनिया क्या सोचती है नहीं पता, लेकिन हमारे माँ-बाप हमेशा हमारे लिए अच्छा ही सोचते है। इसीलिए कहता हूँ दोस्तों, उन हाथों को मत भूलना जिन्होंने आपको ऊपर उठाया है। अपने खून पसीने से पाल पोषकर आपको एक नेक इंसान बनाया है। इसलिए अपने माता-पिता का नौकर बन जाओ, ईश्वर तुम्हें दुनिया का बेताज बादशाह बना देगा। जितना प्यार आप अपने माँ-बाप से करोगे उतना ही आपकी संतान आपसे प्यार करेगी। बस एक बात कहना चाहूँगा कि हम जो भी हैं या होने की आशा रखते हैं उसका श्रेय सिर्फ और सिर्फ हमारे माता-पिता को जाता है।

गुप्तेश्वर प्रसाद
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

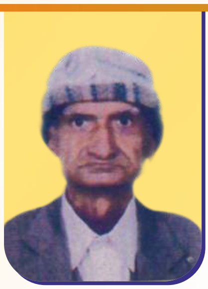

भारतीय (गुजरात) खिलाड़ी का अविश्वसनीय रिकॉर्ड

किसी देश की प्रगति उस देश की सभ्यता और संस्कृति के विकास से जानी जाती है। सभ्यता हमारे भौतिक विकास से जानी जाती है, संस्कृति हमारे सांस्कृतिक विकास का प्रतीक है। साहित्य, कला और दर्शन हमारी संस्कृति के अंग हैं। मॉडल व स्टंटमैन विश्व स्तर पर एक खेल संस्कृति को जन्म देते हैं। क्रिकेट और हॉकी की खेल संस्कृति लोकप्रियता के शिखर पर है।

भारतीय प्रतिभा ने एक बार फिर देश का नाम रोशन किया है। गुजरात में सूरत निवासी मॉडल व स्टंटमैन विस्पी खराड़ी ने इटली के मिलान में लो शो देई रिकॉर्ड के सेट पर लोहे की छड़ों को सिर से मोड़कर रिकॉर्ड बनाया। भारतीय प्रतिभा के विश्व रिकॉर्ड ने लोगों को हैरान कर दिया। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (जी.डब्ल्यू.आर.) द्वारा साझा वीडियो अब वायरल हो रहा है। इस वीडियो के अनुसार विस्पी ने यह उपलब्धि 7 फरवरी 2023 को लो शो देई रिकॉर्ड के सेट पर हासिल की। उन्होंने 1 मिनट में सबसे अधिक लोहे की 24 छड़ें (सरिया) को एक-एक करके मोड़ा। वीडियो पोस्ट किए जाने के बाद 39000 से ज्यादा बार देखा जा चुका है। वीडियो में विस्पी खराड़ी अपने सिर से छड़ों को मोड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। वीडियो में विस्पी खराड़ी ने सिर पर बंदना लपेटा हुआ है। वह छड़ों को एक-एक करके मोड़ते हैं। वीडियो के अंत में उन्हें घटना का मूल्यांकन करने वाले निर्णायक से आधिकारिक वर्ल्ड रिकॉर्ड्स का प्रमाणपत्र भी प्राप्त हुआ।

सुभाष चंद्र गुप्ता
उप निदेशक (सेवानिवृत्त)

केरल यात्रा वृत्तान्त

हम सात मित्रों ने केरल के प्रमुख शहरों के प्राकृतिक सौंदर्य और स्थानीय संस्कृति का आनंद लिया। यात्रा की शुरुआत केरल के प्रसिद्ध शहर 'कोच्चि' से हुई। कोच्चि को अरब सागर की रानी के रूप में जाना जाता है। यह दुनिया के बेहतरीन प्राकृतिक बंदरगाहों में से एक है और ब्रिटिश, चीनी, पुर्तगाली, डच आदि के साथ व्यापार का प्रमुख केंद्र है। यहाँ के दर्शनीय स्थलों में कोचीमरीन, डच पैलेस, यहूदी आराधनालय, लुलु मॉल आदि प्रसिद्ध हैं। रात्रि में हम निगम के कोच्चि स्थित टी.ओ.आर. में ठहरे।

अगले दिन मट्टुपेट्टी बांध के लिए निकल पड़े, जो मुन्नार की एक खूबसूरत जगह है। इसके बाद कुंडला झील की सैर की। यह एक प्राकृतिक झील है जिसमें बोटिंग जैसी मनोरंजक सुविधाएँ हैं और आसपास हरियाली के नज़ारे भी हैं। हमने इको पॉइंट और चाय के बागान भी देखे। दोपहर बाद एराविकुलम नेशनल पार्क गये जहाँ लुप्तप्राय नीलगिरि तहर (एक बकरी जैसा जानवर) को संरक्षित किया जाता है। हमने मुन्नार के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लिया और वहाँ ऊंची पहाड़ियों और चाय बागानों के बीच ट्रेकिंग की। रात्रि को हमने मुन्नार में ठहराव किया।

अगले दिन हम अल्लेप्पी गये जहां हमने एक हाउसबोट किराए पर ली। यह हाउसबोट पारंपरिक केरल शैली की नौका थी। एक हाउसबोट बनाने में बांस के खंभे, नारियल फाइबर रस्सियाँ, बांस की चटाई, कालीन आदि इस्तेमाल किए जाते हैं। रात को हाउसबोट में ठहरे। हमने अल्लेप्पी की नहरों, घाटों और अन्य प्राकृतिक स्थानों की सैर की। यह नौका यात्रा हमारे लिए यादगार रही।

अगली सुबह हमने कोवलम की सैर की जो केरल का एक प्रमुख समुद्र तट स्थल है। यह एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध समुद्र तट है, जिसके समीपवर्ती तीन अर्धचंद्राकार समुद्र तट हैं जहाँ मनोरंजन के कई विकल्प हैं जिनमें धूप सेंकना, तैराकी, आयुर्वेदिक बॉडी मसाज, सांस्कृतिक कार्यक्रम और कटमरैन क्रूज़िंग आदि प्रमुख हैं। रात्रि को हमने कोवलम में ठहराव किया।

अंतिम दिन हम त्रिवेंद्रम गये जो केरल की राजधानी है और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। हमने श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के दर्शन किये और इसकी पावनता का अनुभव किया। यह भगवान विष्णु का मंदिर है जो केरल और द्रविड़ वास्तुशिल्प शैली का अनुपम उदाहरण है। इसे दुनिया का सबसे धनी मंदिर माना जाता है। इस मंदिर का इतिहास 8वीं सदी से मिलता है। यह विष्णु के 108 पवित्र मंदिरों में एक है जिसे भारत का दिव्य देसम भी कहते हैं। इसका उल्लेख तमिल संतों द्वारा लिखित पांडुलिपियों में मिलता है। इसके बाद हमने शहर के प्रमुख बाजारों का भी भ्रमण किया। रात्रि में त्रिवेंद्रम स्थित टी.ओ.आर. में रूके।

केरल की इस यात्रा ने हमें केरल के प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक धरोहर और भौतिक खूबसूरती से परिचित कराया। हमने इस यात्रा के दौरान न केवल विभिन्न महत्वपूर्ण स्थलों की यात्रा की, बल्कि स्थानीय संस्कृति की भी जानकारी भी मिली। इस यात्रा ने हमें भारतीय सभ्यता के बहुआयामी स्वरूप को जानने का अवसर प्रदान किया।

हरि राम डांगी
प्रवर श्रेणी लिपिक

अशांति (हास्य कथा)

हुआ ये कि एक बार ईश्वर अपनी दो कृतियों पुरुष और स्त्री के साथ एक आम के पेड़ के नीचे बैठे थे। याद रहे कि सदियों से सुनाई जा रही सेव वाली कहानी इस सच को छुपाने के लिए ही गढ़ी गई थी। तो वापस आते हैं कहानी पर। ईश्वर अपनी आदत से मजबूर दोनों को एक नैतिक उपदेश वाली कहानी सुना रहे थे। पुरुष अपनी आदत से मजबूर कान बंद कर आँखों से स्त्री को निहारने में लगा हुआ था। यहाँ पर ये बता दें कि ईश्वर की इन दो अनमोल कृतियों के बीच वो एक ऐतिहासिक घटना नहीं घटी थी, जिसके बाद इतना रायता फैला है और उसके पीछे सेव वाली कहानी जैसी बिना सिर-पैर की कहानी लोग सदियों से सुनाते आ रहे हैं। ओह, फिर भटक गया कहानी से।

ईश्वर कह रहे थे, " इस जीव जगत को बनाने के पीछे मेरा उद्देश्य सिर्फ यह है कि आप दोनों यहाँ सुकून से प्रकृति का आनंद ले सकें। ये झरने,पहाड़,नदियां सब आप के लिए एक शांत और बौद्धिक वातावरण का निर्माण करेंगे।"

स्त्री ईश्वर की ओर ध्यान से देख रही थी, हालाँकि ईश्वर जानते थे कि वो अपने जूड़े के बारे में सोच रही है जो उसने सुबह-सुबह ही बेला के फूलों से गुंथा था। पुरुष अपना काम कर रहा था यानि कि स्त्री को ताड़ना। वो स्त्री के सौन्दर्य को ऊपर-नीचे, दायें-बाएं, आगे-पीछे हर तरफ से देख लेना चाहता था जब तक ईश्वर का ये उबा देने वाला उपदेश ख़त्म नहीं हो जाता। ईश्वर जानते थे, ये जैसा दिख रहा है, अन्दर भी वही सोच रहा है। ईश्वर इसी बात से डरते थे। उन्होंने स्त्री और पुरुष को इस धरती पर आध्यात्मिक अनुभव के लिए भेजा था। लेकिन, जैसा सोचते हैं, हमेशा वैसा होता थोड़े ही है और ये भी भ्रम है कि ईश्वर इन चक्करों से मुक्त हैं।

पुरुष ईश्वर की बनी इस नयी दुनिया का आनंद लेते-लेते उब चुका था। स्वादिष्ट फल, मीठा पानी शुरू-शुरू में तो उसे खूब पसंद आये। लेकिन, अब उसका ध्यान उस सुन्दर स्त्री की ओर था, जिसे उसके साथ ईश्वर इस धरती पर ले आये थे। साथ ही सख्त हिदायत भी दी थी कि दोनों आपस में बिलकुल भी बात न करें। पुरुष ने ईश्वर की नज़र बचा कर कई बार स्त्री से बात करनी चाही थी। लेकिन, स्त्री उसे अनसुना कर आगे बढ़ जाती। वैसे एक-दो बार पुरुष ने भी उसे अपनी तरफ चोर निगाहों से देखते हुए पकड़ ही लिया था। तभी उसकी हिम्मत भी थोड़ी बढ़ी हुई थी। ईश्वर ये सब जानते थे। परन्तु फिर भी कोशिश कर रहे थे कि पुरुष का ध्यान न भटके। इसीलिए वो आज कल सुबह के उपदेश में संयम और ब्रह्मचर्य पर जोर देते रहते थे। ऐसा भी न था कि ईश्वर पत्थर दिल थे। लेकिन, वो अपनी दशा जानते थे। वे स्वयं अपनी देवी से भागे-भागे फिर रहे थे। यहाँ एक नयी धरती बनाने का प्रोजेक्ट लेकर थोड़े दिन सुकून से बिता रहे थे। उन्होंने सोचा था, कभी-कभी धरती पर आकर चैन की सांस लेंगे। रोज़-रोज़ की चिक-चिक से थोड़े दिनों की तो छुट्टी मिलेगी। ऐसे में वे पुरुष को मेहनत और उम्मीद से बनी इस दुनिया को तबाह नहीं करने देना चाहते थे।

लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन स्त्री अकेले में झरने में नहा रही थी। पुरुष एक पेड़ पर चढ़ा हुआ एक बन्दर से अमरुद की छिना-झपटी कर रहा था। तभी उसकी निगाह नीचे झरने के पास गई। नीचे देखते ही उसने अमरुद को बन्दर के हाथ जाने दिया। बन्दर भी एकाएक हुए इस हृदय परिवर्तन से चौंक गया। स्त्री नहाकर दूसरी तरफ चली गई। उस शाम पुरुष बगीचे से सुन्दर पुष्पों का एक गुच्छा बनाकर स्त्री के पास गया। स्त्री आग के पास बैठी अपने बालों में फूल गूँथ रही थी। एक बिल्ली उसके पास बैठी उसे हैरत से देख रही थी। पुरुष ने उसके पीछे जाकर उसके बालों में एक गुलाब खोंस दिया और बाकी के फूल उसके गोद में धर दिए। स्त्री इस समय इतने सारे सुन्दर फूलों को देख ख़ुशी से

फूली न समा रही थी। वो बोली, "तुम्हे कैसे पता कि मुझे फूल पसंद हैं!"

"मुझे सब पता है, ईश्वर से भी ज्यादा। तुम रोज़ सवेरे फूलों के बगीचे में जाती हो, मैं सब देखता हूँ। कल तुम्हारे पैर में एक कांटा भी चुभ गया था। तुम्हारे पैर से खून बहते देख मुझे बहुत पीड़ा हुई। लेकिन, ईश्वर को कुछ पड़ी नहीं है। उन्होंने तुमसे एक बार भी इसके बारे में नहीं पूछा। मैं रोज़ तुम्हारे लिए सुन्दर फूलों के गुच्छे लाऊंगा।" स्त्री चुप रही। आग से आलू निकाल कर ठंडे करने लगी। पुरुष ने पूछा," ये क्या कर रही हो?" "आलू आग में पका देने पर स्वादिष्ट लगते हैं और पचते भी आसानी से हैं।" कहकर स्त्री ने एक आलू उसके हाथों में रख दिया। आलू रखते हुए दोनों के हाथ छू गये। मानो, बिजली सी कौंध गई हो दोनों के शरीर में। दोनों के शरीर में एक सिहरन सी हो गई। पुरुष ने गरम आलू ही मुंह में रख लिया। लेकिन, जलन उसे पूरे शरीर में हो रही थी। उसने आलू निगल लिया।

"आलू बहुत स्वादिष्ट है।" पुरुष ने मुस्कुराते हुए कहा। स्त्री ने मुस्कुराकर उसकी ओर देखा।

"तुम बहुत खुबसूरत हो। इस धरती पर तुम्हारे जैसी सुन्दर रचना कोई और नहीं।" पुरुष ने जाल फेंका। "झूठ बोलते हो।" स्त्री ने इठलाते हुए कहा।

"सच बोल रहा हूँ। मैं तुम्हे बहुत पसंद करता हूँ।" कहकर पुरुष ने स्त्री की कलाई पकड़ ली। स्त्री ने भी खुद को पकड़े जाने दिया। तभी हवा का एक झोंका आया और आग बुझ गई। स्त्री डर से 'हे ईश्वर' कहती हुई पुरुष से लिपट गई। फिर जो हुआ, वो आप सेव वाली कपोल-कल्पित कहानी में सुन चुके हैं।

अगली सुबह ईश्वर ने स्वच्छंद विचरण करने वाले पुरुष को आलू बटोरते, फूल जमा करते देखा। वो समझ गये, यहाँ अब गृहस्थी शुरू हो चुकी है। मतलब उनकी बनाई हुई धरती की शांति हमेशा के लिए भंग हो चुकी थी। ईश्वर ने तभी वहां से अपना बोरिया-बिस्तर समेटा और निकल लिए। वो समझ गये, शांति पुरुष के नसीब में है ही नहीं, वो चाहे सामान्य पुरुष हो चाहे ईश्वर! तब से धरती ऐसी ही चल रही रही है, जैसी आप देख रहे हैं, अशांत।

राजीव शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

चोट

सोचें अगर जिंदगी में तो, कभी कुछ पूरा होता नहीं है।
चोट लगे अपनों से तो, आदमी खुलकर रोता नहीं है।
मीठा फल पाना चाहे, पर उपयुक्त बीज बोता नहीं है।
चिंताओं के उलझन में, कोई रात भर सोता नहीं है।
जो दिख रहा है सामने, वो वास्तव में होता नहीं है।
वास्तव में जो होता है, वो सामने से दिखता नहीं है।
नियंत्रण रखे अरमानों पर, बहकने से कुछ मिलता नही है।
रहें हमेशा ख़ुशी से हम, दु:खी कभी हँस पाता नहीं है।

दीन दयाल शर्मा
कार्यालय अधीक्षक

झलकियाँ

राजभाषा सम्मेलन

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह - वर्ष 2024

संयुक्त निदेशक द्वारा
पंचदीप प्रज्वलन

माननीय गृहमंत्री महोदय की अपील का वाचन
करते हुए संयुक्त निदेशक

महानिदेशक महोदय की अपील का वाचन
करते हुए श्री एस.डी.चंदेल,उप निदेशक

राजभाषा चल-शील्ड प्रदान
करते हुए संयुक्त निदेशक

संयुक्त निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरण

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह - वर्ष 2024

संयुक्त निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरण

पुरस्कार वितरण

श्री ज्ञानरंजन बेहेरा,
सहायक निदेशक द्वारा संबोधन

श्री अंकित कुमार,उप निदेशक
द्वारा संबोधन

श्री एस.डी.चंदेल, उप निदेशक
का उद्बोधन

संयुक्त निदेशक द्वारा
अध्यक्षीय उद्बोधन

झलकियाँ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत क.रा.बी. औषधालय, पांडेसरा में वृक्षारोपण कार्यक्रम

गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

आओ गुजराती सीखें
(दुकानदार और ग्राहक के बीच संवाद)

(1)

हिन्दी	ગુજરાતી
ग्राहक : पानी की बोतल मिलेगी क्या ?	ગ્રાહક : શું પાણી ની બોટલ મળશે ?
दुकानदार : जी है । कितने लीटर वाली चाहिए ?	દુકાનદાર : જી છે. કેટલા લીટરની જોઇયે છે?
ग्राहक : एक लीटर वाली दो बोतलें दे दीजिये ।	ગ્રાહક : એક લીટર વાળી બે બોટલ આપી દો.
दुकानदार : ये लीजिये बाबूजी ।	દુકાનદાર : આ લો બાબુજી.
ग्राहक : कितने पैसे हुए इसके ?	ગ્રાહક : આના કેટલા પૈસા થયા ?
दुकानदार : जी पचास रुपये ।	દુકાનદાર :જી પચાસ રૂપીયા.
ग्राहक : पचास रूपये किस बात के ? इस पर तो बीस रूपये लिखा है और बीस के हिसाब से चालीस हुए ना ?	ગ્રાહક : પચાસ રૂપીયા કઇ વાતના ? આના પર તો વીસ રૂપીયા લખ્યા છે અને વીસ પ્રમાણે તો ચાલીસ થયા ને ?
दुकानदार : जी, बाजार में बीस रूपये की एक बिकेगी पर बाजार से दूर यहाँ पर तो पच्चीस रूपये की एक बोतल मिलेगी ।	દુકાનદાર : જી, બજાર માં વીસ રૂપીયાની એક વેચાશે પણ બજાર થી દૂર આટલે તો પચ્ચીસ રૂપીયા ની એક બોટલ મળશે .
ग्राहक : ये क्या बात हुई ? यह तो आपकी मनमानी है ।	ગ્રાહક : આ શું વાત થઇ ? આ તો તમારી મનમાની છે .
दुकानदार : जी यह मेरी मनमानी नहीं है। यहाँ के सारे दुकानदार इसी दाम पर बेचते हैं ।	દુકાનદાર : જી આ મારી મનમાની નથી. અહીનાં બધા દુકાનવાળા આજ કિંમત માં વેચે છે.
ग्राहक : अब भैया, यह तो वही बात हो गई कि मरता क्या ना करता । प्यास लगेगी तो इंसान खरीदेगा ही ना ।	ગ્રાહક : અરે ભાઇ, આ તો એજ વાત થઇ ગઇ કે મરતો શું ન કરે . તરસ લાગશે તો માણસ ખરીદશે જ ને.
दुकानदार : देखिए, आपको लेना हो तो लो, बस मेरा समय खराब मत करो । मुझे दूसरे ग्राहकों को भी देखना है ।	દુકાનદાર :જોવો ભાઇ, તમારે લેવી હોય તો લો, બસ મારો સમય ન બગાડો. મારે બીજા ગ્રાહકો ને પણ જોવાના છે.
ग्राहक : लेकिन दूसरे ग्राहकों से भी तुम ऐसे ही मनमानी करोगे। इसकी शिकायत तो करनी ही पड़ेगी ।	ગ્રાહક : પણ તમે બીજા ગ્રાહકો સાથે પણ આવી રીતે જ મનમાની કરશો. આની ફરિયાદ તો કરવી જ પડશે.
दुकानदार : अरे भाई साहब ले लीजिये बीस रूपये की ही। कहाँ शिकायत के चक्कर में पड़ रहे हो साहब ।	દુકાનદાર : અરે ભાઈ સાહેબ લઇ લો વીસ રૂપીયાની જ. ક્યાં ફરિયાદ ના ચક્કર માં પડી રહીયા છો સાહેબ.
ग्राहक : भैया अभी तो दोगे बीस रूपये की। फिर आपने बाकी लोगों को वही देनी है पच्चीस की। वैसे भी खाली आपके लिए थोड़ी है शिकायत । ये तो यहाँ पर इतने दुकानदार जो फ़ालतू पैसे लेते हैं उन सबके लिए होगी ।	ગ્રાહક : ભાઇ હમણાં તો આપી દેશો વીસ રૂપીયામાં પણ તમે બીજા લોકોને તો એ જ પચ્ચીસ માં આપવાની છે. એમ પણ ફરિયાદ ફક્ત તમારા માટે જ થોડી છે. આ તે બધા દુકાનદારો માટે હશે જેઓ બિનજરૂરી પૈસા લે છે.
दुकानदार : अरे साहब माफ़ कर दीजिये । आगे से ध्यान रखेंगे और मैं अन्य दुकानदारों को भी बता दूँगा ।	દુકાનદાર : અરે સાહેબ માફ કરી દો. આગળ થી ધ્યાન રાખીશું અને હું બીજા દુકાનવાળાઓ ને પણ કહી દઇશ.
ग्राहक : ठीक है आगे से ध्यान रखना नहीं तो उपभोक्ताओं के लिए उपभोक्ता फोरम तो है ही शिकायत के लिए ।	ગ્રાહક : ઠીક છે, ભવિષ્યમાં ધ્યાન રાખજો, નહીં તો ગ્રાહકો ને ફરિયાદ કરવા માટે ગ્રાહક ફોરમ છે.

(2)

हिन्दी	ગુजराती
ग्राहक: नमस्ते, क्या आपके पास चावल हैं ?	ગ્રાહક : નમસ્તે, શું તમારી પાસે ચોખા છે.
दुकानदार: नमस्ते जी, हाँ ज़रूर। आपको कौन सा चावल चाहिए? बासमती, इंद्रायणी, मोगरा या कोई अन्य?	દુકાનદાર : નમસ્તે જી, હા છે. તમને કયા ચોખા જોઇએ છે ? બાસમતી, ઇંદ્રાયણી, મોગરા કે બીજા કોઇ?
ग्राहक: जी, मुझे बासमती चावल चाहिए। क्या भाव है ?	ગ્રાહક : જી, મને બાસમતી ચોખા જોઇએ છે. શું ભાવ છે ?
दुकानदार: बासमती चावल 50 रूपए किलो है।	દુકાનદાર : બાસમતી ચોખા ૫૦ રૂપિયા કિલો છે .
ग्राहक: 5 किलो बासमती चावल तौल दीजिए। (दुकानदार चावल तौलकर ग्राहक को देता है)	ગ્રાહક :૫ કિલો બાસમતી ચોખા તોલી આપો. (દુકાનદાર ચોખા તોલીને ગ્રાહક ને આપે છે.)
ग्राहक: धन्यवाद। क्या आपके पास अरहर और मसूर की दाल भी है ?	ગ્રાહક : આભાર. શું તમારી પાસે તુવેર અને મસૂર ની દાળ પણ છે ?
दुकानदार: हाँ जरूर। अरहर की दाल 90 और मसूर 70 रूपए किलो है।	દુકાનદાર : હા છે. તુવેર ની દાળ ૯૦ અને મસૂર ૭૦ રૂપિયા કિલો છે.
ग्राहक: मुझे 2 किलो अरहर और 1 किलो मसूर की दाल भी दीजिये।	ગ્રાહક :મને ૨ કિલો તુવેર અને ૧ કિલો મસૂર ની દાળ પણ આપો.
दुकानदार: ये रहा आपका सामान, और कुछ भी चाहिए ?	દુકાનદાર : આ રહ્યો તમારો સામાન, બીજું કાઈ પણ જોઇએ છે ?
ग्राहक: जी नहीं! बिल बना दीजिये।	ગ્રાહક :જી નહી ! બિલ બનાવી આપો.
दुकानदार: (दुकानदार बिल देते हुए) आपके पूरे 500 रूपए हुए।	દુકાનદાર :(દુકાનવાળો બિલ આપતા) તમારા પૂરા ૫૦૦ રૂપિયા થયા.
ग्राहक: (पैसे देते हुए) धन्यवाद।	ગ્રાહક : (રૂપિયા આપતા) આભાર.
दुकानदार: फिर आइएगा।	દુકાનદાર : ફરી આવજો.

नीरव अग्रवाल

सहायक

मातृभाषा का अनादर भी मां के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेश-भक्त कहलाने लायक नहीं है।

महात्मा गाँधी

राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सुझाव

- हिन्दी में हस्ताक्षरित अंग्रेजी पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दें।
- उपस्थिति रजिस्टर में हस्ताक्षर हिन्दी में ही करें।
- छुट्टी हेतु आवेदन सहित अन्य सभी आवेदन एवं अभ्यावेदन पत्र हिन्दी में ही दें। ई.आर.पी. मॉड्यूल में छुट्टी आवेदन हिन्दी में निकालने का विकल्प है।
- केवल द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रबर मोहरों का ही प्रयोग करें।
- लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखे जाएँ।
- चैक हिन्दी में ही जारी करें।
- सभी फाइलों एवं रजिस्टरों के शीर्षनाम द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रूप में होने चाहिए। इनमें हिन्दी, अंग्रेजी के ऊपर होनी चाहिए। यह भी ध्यान रखा जाए कि अंग्रेजी के अक्षर हिन्दी के अक्षरों से बड़े न हों।
- सभी रजिस्टरों में प्रविष्टियाँ हिन्दी में ही करें।
- सभी नामपट्ट एवं साईनबोर्ड द्विभाषी अथवा आवश्यक हो तो त्रिभाषी रूप में होने चाहिए।
- सेवा-पुस्तिकाओं के शीर्षनाम द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रूप में होने चाहिए। इनमें प्रविष्टियाँ हिन्दी में की जानी चाहिए।
- विज्ञापनों पर व्यय की जाने वाली कुल राशि का 50 प्रतिशत (न्यूनतम) हिन्दी विज्ञापनों पर खर्च किया जाना चाहिए।
- पुस्तकों की खरीद पर किए जाने वाले कुल व्यय का 50 प्रतिशत (न्यूनतम) हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया जाना चाहिए।
- ई-मेल में हिन्दी का प्रयोग करें।
- द्विभाषिक रूप से मुद्रित पत्रों में केवल हिन्दी भाग भरा जाए।
- कार्यालयीय कार्यों यथा- पत्र, प्रपत्रों एवं टिप्पण आदि में हिन्दी में ही हस्ताक्षर करें।
- अधिक से अधिक पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाने के प्रयास किये जाएँ।
- जांच बिन्दुओं का अनिवार्यतः अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।
- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रयास किए जाएँ।

राजभाषा शाखा

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

मैथिलीशरण गुप्त

राजभाषा प्रयोग संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से जारी संकल्पों, सामान्य आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों, प्रेस विज्ञप्तियों, संविदाओं, करारों, अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञा पत्रों, निविदा सूचनाओं, निविदा प्रारूपों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाएं प्रयोग में लाई जाएंगी। संसद के समक्ष रखे गए प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज पत्रों के लिए भी हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग होगा।

राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित 1987)

नियम 3

1) केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से 'क' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि हिंदी में होंगे। यदि कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसके साथ-साथ उसका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।
2) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से 'ख' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय को पत्रादि सामान्यतया हिंदी में होंगे और यदि कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसके साथ-साथ इसका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा। 'ख' क्षेत्र के राज्य में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिंदी में अथवा अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।
3) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से 'ग' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार के कार्यालय न हों) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।
4) 'ग' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय से 'क' क्षेत्र या 'ख' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं।

नियम 5

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिया जाएगा।

नियम 11

केंद्रीय सरकार के कार्यालय से संबंधित मैनुअल, संहिताएँ, अन्य प्रक्रिया संबंधी साहित्य, फॉर्म और रजिस्टरों के शीर्ष, नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्र शीर्ष, लिफाफों पर छपे लेख, स्टेशनरी की अन्य मदें आदि हिंदी और अंग्रेजी में होंगी।

राजभाषा शाखा

किसी राष्ट्र की राजभाषा वही भाषा हो सकती है जिसे उसके अधिकाधिक निवासी समझ सके।
(आचार्य) चतुरसेन शास्त्री

सूरत में क.रा.बी.योजना : एक नजर

कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948, बीमाकृत व्यक्तियों को उनकी आवश्यकता एवं नियमानुसार चिकित्सा अधिकारियों के माध्यम से चिकित्सा देखभाल एवं नकद हितलाभ जैसे बीमारी हितलाभ, मातृत्व हितलाभ, आश्रितजन हितलाभ, स्थायी एवं अस्थायी अपंगता हितलाभ उपलब्ध कराता है। यह अधिनियम, रोजगार चोट के कारण हुई अर्जन क्षमता की हानि होने पर स्थायी शारीरिक अपंगता हितलाभ के अलावा बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु होने की स्थिति में अंत्येष्टि खर्च भी प्रदान करता है। इसके अलावा यह वृद्धावस्था चिकित्सा देखभाल एवं राजीव गाँधी श्रमिक कल्याण योजना भी उपलब्ध कराता है।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना को गुजरात राज्य में दिनांक 04.10.1964 को लागू किया गया था। प्रथम चरण में यह योजना अहमदाबाद शहर एवं इसके उपनगरों में लागू की गई थी तथा बाद में इसे सूरत सहित राज्य के अधिकतर केंद्रों तक विस्तृत कर दिया गया। प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रखते हुए दिनांक 13.11.2000 को उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत अस्तित्व में लाया गया। सूरत में इसके अधीनस्थ 03 शाखा कार्यालय- सलाबतपुरा, लाल दरवाजा, नवसारी एवं 01 औषधालय सह शाखा कार्यालय- वापी भी हैं। यह योजना दिनांक 17.01.2011 से सभी इकाइयों, जहाँ 10 या इससे अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं, के लिए लागू है।

सूरत में क.रा.बी.योजना के आँकड़े
(दिनांक 31.03.2024 तक के आंकड़ों के आधार पर)

क्र.सं.	मद	वर्ष 2023-24
1	शाखा कार्यालयों की संख्या	3
2	औषधालय सह शाखा कार्यालयों की संख्या	1
3	जिलों की कुल संख्या	5
4	पूर्णतः अधिसूचित जिलों की संख्या	1
5	आंशिक रूप से कार्यान्वित जिलों की संख्या	2
6	गैर कार्यान्वित जिलों की कुल संख्या	2
7	बीमाकृत व्यक्तियों की कुल संख्या	4,84,580
8	बीमाकृत महिलाओं की कुल संख्या	63,530
9	कर्मचारियों की कुल संख्या	4,51,780
10	लाभार्थियों की कुल संख्या	19,38,320
11	पंजीकृत नियोक्ताओं की कुल संख्या	24,327
12	क्षेत्र की राजस्व आय (करोड़ों में)	266.72
13	राजस्व वसूली की राशि (करोड़ों में)	2.76
14	नकद हितलाभ पर व्यय (करोड़ों में)	17.73

कार्यालय में वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा की प्रगति

- कार्यालय की शाखाओं एवं अधीनस्थ शाखा कार्यालयों सहित मुख्यालय एवं टेली-ट्रांसलेशन सेल, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई से प्राप्त सभी दस्तावेजों के अनुवाद उपलब्ध करवाए गए।
- राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) एवं राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 का पूर्णतः अनुपालन सुनिश्चित किया गया।
- राजभाषा विभाग, भारत सरकार के निदेशों के अनुसरण में 04 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 44 कार्मिकों को राजभाषा नियमों/अधिनियमों एवं कार्यालय के विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गयी एवं अभ्यास कार्य करवाया गया।
- कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मदों पर चर्चा की गई और इस संबंध में उचित कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया।
- वर्ष के दौरान हिंदी गृहपत्रिका 'सूरत तरंग' का चतुर्थ अंक प्रकाशित किया गया।
- हिन्दी पत्राचार के वास्तविक मूल्यांकन के लिए सभी शाखाओं के रिपोर्ट बनाने वाले संबंधित सहायकों को हिन्दी मासिक रिपोर्ट में दिए जाने वाले आंकड़ों के संबंध में नियमित रूप से मार्गदर्शन दिया गया।
- हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना, वर्ष 2023 के अंतर्गत कुल 66 कार्मिकों तथा मूल हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना, वर्ष 2023-24 के अंतर्गत कुल 10 कार्मिकों को पुरस्कार दिए गए।
- हिन्दी टंकण प्रशिक्षण के अंतर्गत पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिन्दी टंकण प्रशिक्षण हेतु पात्र 7 कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।
- राजभाषा कार्यान्वयन के लिए स्थापित जांच बिन्दुओं की सूची जारी की गयी तथा इनके अनुपालन पर निगरानी रखी गयी।
- राजभाषा नीति के अनुपालन की स्थिति का जायजा लेने के लिए तथा राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही कठिनाइयों का समाधान करने हेतु उप क्षेत्रीय कार्यालय की शाखाओं एवं अधीनस्थ शाखा कार्यालयों का निरीक्षण किया गया।
- राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी जाने वाली मासिक, तिमाही, छ:माही एवं वार्षिक प्रगति रिपोर्टें यथासमय प्रेषित की गयीं।
- दिनांक 14 से 29 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान निर्धारित 04 प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं।

हिन्दी किसी विशिष्ट वर्ग, प्रदेश या समुदाय की भाषा न होकर भारतीय जनता की भाषा है।

फादर कामिल बुल्के

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत में राजभाषा पखवाड़ा, वर्ष 2024 का आयोजन - रिपोर्ट

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं मुख्यालय के निदेशों के अनुसरण में उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत में दिनांक 14.09.2024 से 29.09.2024 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 14-15 सितंबर, 2024 को नई दिल्ली में आयोजित 'हिन्दी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' में सहभागिता की गयी। राजभाषा पखवाड़े के दौरान कार्यालय के मुख्य द्वार पर राजभाषा पखवाड़े का बैनर प्रदर्शित किया गया। हिन्दी भाषा की कुछ प्रमुख सूक्तियों को कार्यालय के प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किया गया। पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी वाक्, हिन्दी टिप्पण-आलेखन व राजभाषा ज्ञान आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं जिनमें कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यालय की शाखाओं तथा अधीनस्थ शाखा कार्यालयों को प्रायः प्रयोग होने वाली नेमी-टिप्पणियों की सूची परिचालित की गयी। इस दौरान अधिकाधिक टिप्पणी, मसौदे, पत्राचार और प्रपत्र जैसे कार्य मूल रूप से हिन्दी में किए जाने पर विशेष बल दिया गया। एक-दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसमें कार्यालय की शाखाओं तथा अधीनस्थ शाखा कार्यालयों के कर्मचारियों को हिन्दी टिप्पण-आलेखन, यूनिकोड, ई-टूल्स, राजभाषा संबंधी आवधिक रिपोर्टों के साथ-साथ कार्यालय की विभिन्न शाखाओं में होने वाले कार्यालयीय कार्य को हिन्दी में करने के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया तथा अभ्यास कार्य करवाया गया।

दिनांक 30.09.2024 को श्री दीपक मलिक, कार्यालय प्रभारी की अध्यक्षता में 'राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की। अध्यक्ष महोदय के कर-कमलों से निगम के प्रतीक 'पंचदीप' के प्रज्वलन के बाद सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय ने माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार से प्राप्त अपील का वाचन किया। श्री शंभू दयाल चंदेल, उप निदेशक ने निगम के महानिदेशक महोदय की ओर से प्राप्त अपील का वाचन किया। इसके बाद श्री अमित इन्दौरिया, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने कार्यालय में वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इसके बाद अध्यक्ष महोदय द्वारा राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान किये गए। वर्ष 2023-24 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने के उपलक्ष्य में 'वसूली शाखा' को अंत: अनुभागीय चल-शील्ड प्रदान की गई। सांस्कृतिक गतिविधियों के अंतर्गत कार्यालय के कर्मचारियों ने गीतों एवं काव्य के माध्यम से मधुर प्रस्तुतियाँ दीं।

श्री ज्ञानरंजन बेहेरा, सहायक निदेशक ने सभी से कार्यालयीय कार्य में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कार्यालयकर्मियों द्वारा हिन्दी में अधिकतम कार्य किए जाने की सराहना करते हुए इसे अनवरत जारी रखने के लिए कहा। इस अवसर पर श्री अंकित कुमार, उप निदेशक ने कार्यालय में हिन्दी में किए जा रहे कार्य की सराहना की। उन्होंने कार्यालय में राजभाषा से संबंधित सांविधिक नियमों के प्रति प्रतिबद्ध रहने के लिए कहा। उन्होंने सभी विजेताओं को बधाई देते हुए सभी को प्रतियोगिताओं में अधिकाधिक संख्या में भाग लेने की सलाह दी।

श्री शंभू दयाल चंदेल, उप निदेशक ने विजेताओं को बधाई देते हुए अन्य प्रतिभागियों को अगली बार और अधिक प्रयास करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि कार्यालय में अधिकतम कार्य हिन्दी में किया जा रहा है जिसके लिए सभी कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। उन्होंने सरल हिन्दी का प्रयोग करते हुए सरकारी काम-काज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने की आवश्यकता पर बल दिया।

अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्बोधन में संघ की राजभाषा नीति से संबंधित नियमों एवं अनुदेशों के अनुपालन पर बल देते हुए राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति सतत् प्रयासरत रहने के लिए कहा। उन्होंने गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार तथा निगम के महानिदेशक महोदय से प्राप्त अपील को आत्मसात करने का आह्वान किया और कहा कि सरकारी कर्मचारी होने के नाते हम सबका दायित्व है कि हम अपने काम में हिन्दी का अनवरत् प्रयोग करें और हिंदी को नए मुकाम तक पहुंचाएं। आगे उन्होंने कहा कि यह समारोह राजभाषा पखवाड़ा के औपचारिक समापन के लिए है लेकिन हमें इसे राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगतिशील रहने की शुरूआत के रूप में मनाना चाहिए। उन्होंने राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देने के साथ-साथ सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन किया। उन्होंने अंत: अनुभागीय चल-शील्ड विजेता 'वसूली शाखा' को बधाई देते हुए अन्य शाखाओं को अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करते हुए शील्ड विजेता बनने के लिए प्रयासरत रहने के लिए कहा।

अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजीव शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक ने किया।

राजभाषा पखवाड़ा, वर्ष 2024 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कार्मिकों का विवरण

क्र.सं.	प्रतियोगिता	स्थान	नाम/पदनाम
1	**हिन्दी निबंध प्रतियोगिता**		
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री अभिनव शर्मा, बहुकार्यकर्मी
		द्वितीय	श्री राजीव शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक
		तृतीय	श्री यश बैसोया, प्रवर श्रेणी लिपिक
		प्रोत्साहन-I	श्री रविश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
		प्रोत्साहन-II	श्री अभय कुमार, सहायक (बीमा I)
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री ज्ञानरंजन बेहेरा, सहायक निदेशक
2	**हिन्दी वाक् प्रतियोगिता**		
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री राजीव शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक
		द्वितीय	श्री शैलेश कुमार दास, सहायक
		तृतीय	श्री पंकज कुमार, सहायक
		प्रोत्साहन-I	श्री चेतन पौनिकर, सहायक
		प्रोत्साहन-II	श्री अभिषेक तिवारी, प्रवर श्रेणी लिपिक
		प्रोत्साहन-II	सुश्री आरती कुमारी, बहुकार्यकर्मी
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री ज्ञानरंजन बेहेरा, सहायक निदेशक
3	**हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता**		
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री चेतन पौनिकर, सहायक
		द्वितीय	श्री शैलेश कुमार दास, सहायक
		तृतीय	श्री गौतम कुमार, सहायक
		प्रोत्साहन-I	श्री पंकज कुमार, सहायक
		प्रोत्साहन-II	श्री राजीव शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री ज्ञानरंजन बेहेरा, सहायक निदेशक
4	**राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता**		
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री पंकज कुमार, सहायक
		द्वितीय	श्री राजीव शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक
		तृतीय	श्री चेतन पौनिकर, सहायक
		प्रोत्साहन-I	श्री शैलेश कुमार दास, सहायक
		प्रोत्साहन-II	श्री हरकेश मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक

कार्यालयीय कार्य में उपयोगी नेमी टिप्पणियाँ

अंग्रेजी	हिन्दी
✦ Above said/mentioned	उपर्युक्त
✦ Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
✦ Approved as proposed	यथा-प्रस्तावित अनुमोदित
✦ Beg to state	निवेदन
✦ Brought forward	अग्रानीत
✦ Draft for approval	मसौदा अनुमोदनार्थ
✦ Duly filled in	विधिवत भरा हुआ
✦ Early orders are solicited	शीघ्र आदेश देने की कृपा करें
✦ Ex-gratia payment	अनुग्रह भुगतान
✦ Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें/कार्रवाई में शीघ्रता करें
✦ Ex post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
✦ For perusal and orders please	अवलोकनार्थ व आदेशार्थ
✦ Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
✦ From prepage	पिछले पृष्ठ से
✦ For approval	अनुमोदनार्थ
✦ For further action	आगे की कार्रवाई के लिए
✦ For guidance	मार्गदर्शन के लिए
✦ For ready reference	तत्काल सन्दर्भ के लिए
✦ Give details	विस्तृत जानकारी दें
✦ Hold in abeyance	प्रास्थगित रखना
✦ In this instance	इस मामले में, इस बारे में
✦ In absence of information	सूचना के अभाव में
✦ In toto	पूरी तरह से
✦ In accordance with	के अनुसार
✦ In compliance with	के अनुपालन में, का अनुपालन करते हुए
✦ Issue reminders urgently	तुरंत अनुस्मारक/स्मरण पत्र भेजिए
✦ In due course	यथासमय
✦ In duplicate	दो प्रतियों में
✦ In lump sum	एकमुश्त
✦ Instructions are solicited	कृपया अनुदेश दें
✦ Inter alia	अन्य बातों के साथ
✦ Kindly acknowledge the receipt	कृपया पावती भेजें
✦ Keep pending	लंबित रखा जाये
✦ Kindly expedite disposal	कृपया शीघ्र निपटारा करें
✦ Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है
✦ May be treated as urgent	इसे अतिआवश्यक समझा जाए
✦ Needful done	आवश्यक कार्रवाई की जा चुकी है
✦ Nota been (N.B.)	विशेष ध्यान दीजिए
✦ Orders are solicited	आदेश अपेक्षित हैं

कार्यालयीय कार्य में उपयोगी नेमी टिप्पणियाँ

अंग्रेजी	हिन्दी
✦ Please keep pending	कृपया इसे रोक कर रखें
✦ Passed for payment	भुगतान के लिए पारित
✦ Please circulate and file	कृपया परिचालित कर फाईल करें
✦ Please issue reminder	कृपया अनुस्मारक भेजें
✦ Sanctioned as proposed	प्रस्ताव के अनुसार मंजूर, यथा प्रस्तावित
✦ Status quo	यथापूर्व स्थिति
✦ Up to date	अद्यतन
✦ Verified and found correct	जांच की और सही पाया
✦ Vide letter No. ...	पत्र संख्या . . . द्वारा
✦ You are hereby informed	एतद्वारा आपको सूचित किया जाता है
✦ Please speak	कृपया बात करें
✦ Please discuss	कृपया चर्चा करें

खेल-कूद में उपलब्धियाँ

श्री भाविन एन. देसाई, सहायक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत ने दिनांक 16 से 19 जनवरी 2024 तक जयपुर (राजस्थान) में आयोजित 'अखिल भारतीय सार्वजनिक टेबल-टेनिस प्रतियोगिता, 2023-24' में निगम का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने इस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इसके अलावा उन्होंने दिनांक 20 से 24 जनवरी, 2024 तक इंदौर (मध्यप्रदेश) में आयोजित '85वीं अंतर-राज्यीय उप कनिष्ठ एवं कैडेट राष्ट्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता-2023' में गुजरात राज्य की महिला टेबल-टेनिस टीम के प्रशिक्षक के रूप में शिरकत की।

श्री नीरव आर.अग्रवाल, सहायक, उप क्षेत्रीय कार्यालय सूरत ने दिनांक 16 से 22 दिसंबर 2023 तक पंचकुला (हरियाणा) में आयोजित 85वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय एवं अंतर-राज्यीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता-2023 में तथा दिनांक 11 से 18 सितंबर 2024 तक कांगरा (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित राष्ट्रीय रैंकिंग प्रतियोगिता-2024 में निर्णायक के तौर पर भाग लिया।

श्री नीरव आर.अग्रवाल ने वर्ष 2024 में अन्तर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस फैडरेशन द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय अंपायर की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

आपकी पाती..

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत की गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर सूरत शहर का विहंगम दृश्य अति आकर्षक बन पड़ा है। यह पत्रिका के शीर्षक को सार्थक बनाता है। मुद्रण स्तरीय है। हर पन्ना पुष्प-सज्जित रूप-रेखा से मनोहारी लगता है। गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' अपने भावों के अनुरूप उप क्षेत्रीय कार्यालय की विविध गतिविधियों की दर्पण प्रतीत होती है। सभी रचनाएं अत्यंत रोचक एवं सूचनापूर्ण हैं। भाषा सारगर्भित है। उत्कृष्ट गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हमारी बधाई स्वीकार करें।

निवेदन है कि भविष्य में भी 'सूरत तरंग' से हमें सरोबार करते रहें।

सूर्यप्रकाश
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

आपके कार्यालय से प्रकाशित विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सूरत तरंग' के 5वें अंक की प्रति सप्रेम प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका के मुखपृष्ठ पर सूरत शहर का विहंगम दृश्य प्रदर्शित किया गया है। पत्रिका का मुद्रण एवं पृष्ठ संयोजन बहुत अच्छा है। इस अंक में प्रकाशित लेख, कविताएँ, कहानी अत्यंत ज्ञानवर्द्धक तथा रोचक हैं। 'बेटी है तो कल है' कविता में एक पिता का बेटी के प्रति स्नेह और गर्व का भाव, भावविभोर कर देने वाला है। 'मजदूर' में मजदूरों की स्थिति का मार्मिक चित्रण मिलता है। अन्य सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं।

'सूरत तरंग' की यह ज्ञानवर्द्धक यात्रा निरंतर चलती रहे। संपादक मण्डल को आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

संत कुमार पाण्डेय
सहायक निदेशक (रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

आपके कार्यालय की विभागीय गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' का राजभाषा विशेषांक प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही उच्च कोटि की है। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर सूरत शहर का दृश्य बहुत ही मनोरम लग रहा है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, रचनाएं, कविताएं रूचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। 'इतिहास के आईने से हिन्दी का भविष्य', 'भारत में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की कितनी जरूरत', 'आश्रित की खोज', 'समाज निर्माण में शिक्षक की भूमिका' विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका में विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र भी पत्रिका को एक नया रूप प्रदान करते हैं।

आशा है यह पत्रिका भविष्य में भी इसी तरह राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में योगदान करती रहेगी।

विकास कुण्डल
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम

आपके द्वारा प्रेषित विभागीय हिन्दी गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' हमें प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक, सुंदर तथा वास्तविक है। पत्रिका की रचनाएँ सरल, सहज एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में लिखे गये लेख जैसे कि श्री रजनीश कुमार राजन, सहायक द्वारा लिखित 'इतिहास के आईने से हिन्दी का भविष्य', श्री अभय कुमार, सहायक द्वारा 'भारत को कर्मचारी राज्य बीमा निगम की कितनी जरूरत', श्री गुप्तेश्वर प्रसाद, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी द्वारा ज्ञानवर्धक रचित लेख 'हमारा ईएसआईसी', श्री दीन दयाल शर्मा, कार्यालय अधीक्षक द्वारा लेखबद्ध 'शिष्टाचार', श्री विक्रम दायमा, कार्यालय अधीक्षक द्वारा कलमबद्ध 'यात्रा वृतांत: अंडमान और निकोबार', श्री अभिषेक फोगाट, कार्यालय अधीक्षक द्वारा लिखित 'वेब 3.0: नए जमाने का इन्टरनेट', श्री अमित इन्दौरिया, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा रचित 'हिन्दी' तथा 'आओ जरा सोचें', श्री अभिनव शर्मा, बहुकार्यकर्मी द्वारा लिखित 'समाज निर्माण में शिखक की भूमिका' आदि रचनाएं बहुत ही सारगर्भित हैं। इसके अलावा पत्रिका की अन्य अन्य रचनाएं भी जैसे कि 'शांति', 'मेरी ताकत', 'उड़ान', 'सहेली', 'मजदूर' तथा 'उम्मीद' भी बहुत ही रोचक तथा सुपाठ्य हैं। उम्मीद है कि पत्रिका की रचनाओं को सभी ने पसंद किया होगा तथा आशा करती हूँ कि आगे आने वाले संस्करणों में भी इसी तरह की अच्छी-अच्छी रचनाएँ पाठकों को उपलब्ध होती रहेंगी। संपादक मण्डल का आभार एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

रोजलीन हेमरोम
सहायक निदेशक (रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत द्वारा 'द सदर्न गुजरात चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़, सूरत' में कर्मचारी राज्य बीमा योजना पर जागरूकता सेमिनार का आयोजन

जैनम ब्रोकिंग लिमिटेड, सूरत में जागरूकता सेमिनार का आयोजन

एसिक स्थापना दिवस पर स्वच्छता अभियान का आयोजन

सूरत अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा

सरथाना प्राणी उद्यान

श्री स्वामीनारायण गुरुकुल

फूलों का बगीचा

उप क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

द्वितीय तल, समर्थ हाउस, पाल लेक के सामने, अडाजन-पाल, सूरत (गुजरात)

दूरभाष : (0261) 2730124-29, ई-मेल : dir-surat@esic.nic.in